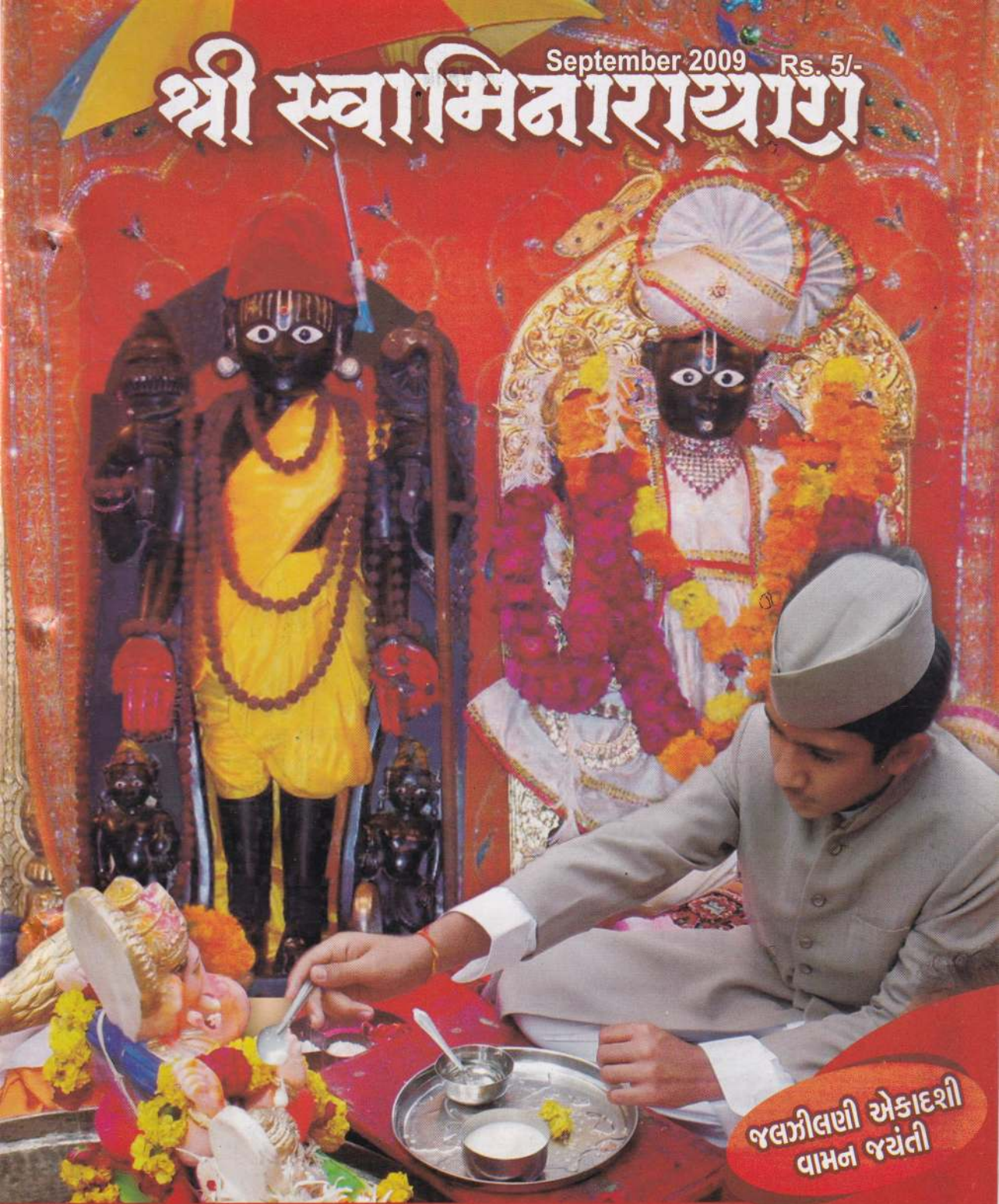
September 2009 Rs. 5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ



જલઝીલણી એકાદશી
વામન જયંતી

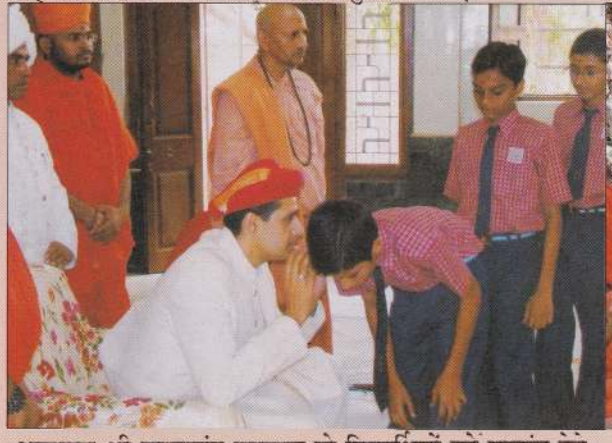
પ્રકાશકઃ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧
Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



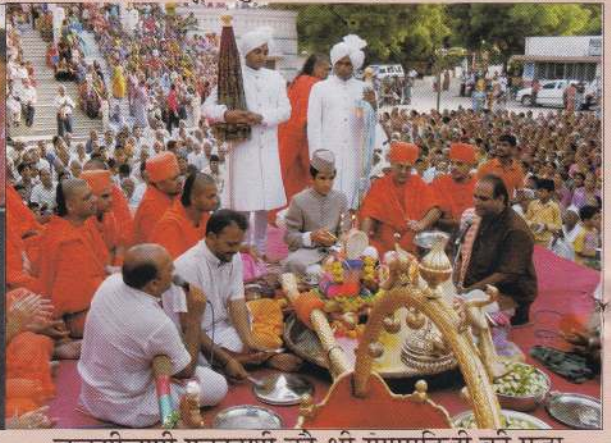
हर्षद कोलोनी की सभा में दर्शन देते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा साथ में शा.स्वा. निर्गुणदासजी एवं अन्य संत



हर्षद कोलोनी मंदिरमें महापूजा में दर्शन देते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री



असारवा श्री सहजानंद गुरुकुल के विद्यार्थियों को गुरुमंत्र देते हुये प.प.ध.ध्. आचार्य महाराजश्री, साथमें शा.स्वा. निर्गुणदासजी



जलझीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी की पूजा करते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री



सिद्धपुर नूतन मंदिर में श्रीहरिकृष्ण महाराज ने अपने चरणारविंद का कुमकुम चर्चित चरण रखे जिसका निरीक्षण करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री



कांकरिया मंदिर में श्रावण मास में सिद्धेश्वर महादेव का अभिषेक करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री



सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के समक्ष अलौकिक झूले का दर्शन



श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 3 | अंक : 29 | सितम्बर-2009

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी कुमकुम रुंपरेरवा	३
३	श्री स्वामिनारायण म्युझियम	४
४	ईष्टदेवमें समर्पित होकर	६
५	तिर्थ विधि निरुपण	८
६	भगवानके अवतारका हेतु	९
७	आचार्य श्री वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री	१०
८	गंगा महिमा	१२
९	श्री नरनारायण प्रति	१४
१०	सत्संग बालवाटिका	१५
११	भक्ति सुधा	१७
१२	सत्संग समाचार	२०

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७७०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.cc.in

मूल्य

प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

: संपादक , मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१
से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित

संपादक , मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिएश्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित

अस्मदीयम

आश्विन मास अर्थात् वर्ष का अंतिम महीना। लौकिक रीति से देंखें तो जगत की एक परंपरा है कि जव किसी प्रसंग का अंत आता है, तो वह सचेत एवं सजग हो जाता है। अंत की तरफ जब गति होती है तो वह उत्तरोत्तर चिंतित होने लगता है। चिंता का कार!ा खोजने लगता है। जो भी समस्या हो या जो भी परेशानी हो उसके समाधान में लगजाता है। पाघड़ी नो वल छेड़े।

यह कहावत भी महदंश मे चरितार्थ होती है। इस वर्ष के अंतिम महीने में हम सभी को आत्म चिंतन करके आध्यात्मिक भाव तथा भजन-भक्ति एवं परमात्मा में कितनी निष्ठा है इसकी गणित अवश्य करनी चाहिये।

नवरात्री का पर्व दुष्ट शक्तियों के सामने आध्यात्मिक शक्तियों की विजय का पर्व है। आनेवाली यह नवरात्री हम सभी को अमर्यादित मानकर नाचने की नवरात्री नहीं है, बल्कि जीवन में कुछ नवीनता को प्राप्त करने की तथा अंधकारमय रात्रियों में से जगकर ज्ञान तथा प्रकाश की नूतन रात्री ही नव-रात्री, उसमें भी आश्विन शुक्ल-१० का दिन अर्थात् विजयादशमी जो हम सभी के गुरु ऐसे प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्यदिन। जिस तरह प्रभु रामचन्द्रजीने रावण का बधकरके इस पावन पर्व पर पृथ्वीको पाप से मुक्त किया था। इसी तरह सर्वावतारी श्रीहरिने अपने ही वंश में इसी पावन अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री को हम सभी के लिये भेंट देकर पृथ्वी से अक्षरधाम का मार्ग सत्संग के लिये खोल दिया है। आश्विन शुक्ल-२ के शुभ दिन हम सभी के लिये भाग्यशाली दिन है। आज के मंगल दिन अपने वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री श्री नरनारायणदेव पीठस्थान पर आरुढ हुये थे। ऐसे पवित्र प्रसंगो से परिपूर्ण यह मास हम सभी को प्रभु के सन्निकट लेजाने वाला बने, ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(आगस्त-२००९)

धर्म प्रवास



संप्रदायमें सर्व प्रथम महेसाणा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३७ वाँ प्रागट्य जयंती महोत्सव संवत २०६५ आश्विन शुक्ल-१० दशहरा दि. २८-९-०९ सोमवार

आमंत्रण प्रतिका

परात्पर परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभुने अपने हाथों से धर्मवंशी आचार्य की परंपरा स्थापित करके उत्तर विभाग श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान अहमदाबाद के वर्तमान पीठाधिपति धर्मकुल भूषण परंपरा में सप्तम क्रम में विराजमान परब्रह्म के स्वरुप को, संदेश को, ज्ञान को, तथा गूढ संकल्प को विश्व के कोने-कोने सामान्य जन तक पहुँचाने में सफल ऐसे प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्य जयंती महोत्सव आगामी वि.सं. २०६५ आश्विन शुक्ल दशमी ता. २८-९-०९ सोमवार के शुभ मंगल दिन को संप्रदाय के इतिहास में सर्व प्रथम सुवर्ण शब्दों से अलंकृत महोत्सव श्री नरनारायणदेव देश गादी का हृदय उत्तर गुजरात दंढाव्य प्रदेश महेसाणा में जहाँ कुशलीबाई की खिचड़ी पांचसौ पहमहंसो के साथ ग्रहण किये थे वह गाथा आज भी अक्षरधाम में गाई जाती है उसी पावन भूमि पर इसी वर्ष महामंदिर में श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव, श्री घनश्याम महाराज की प्राण प्रतिष्ठा हुई है, वहीं पर हजारों संत-हरिभक्तों की उपस्थिति में तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। उस महोत्सव में उपस्थित होने के लिए हार्दिक आमंत्रण है।

प्रेषक - श्री नरनारायणदेव देश स्कीम कमेटी की तरफ से
महंत शा. उत्तमप्रियदासजी तथा महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी
श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा (हाईवे)

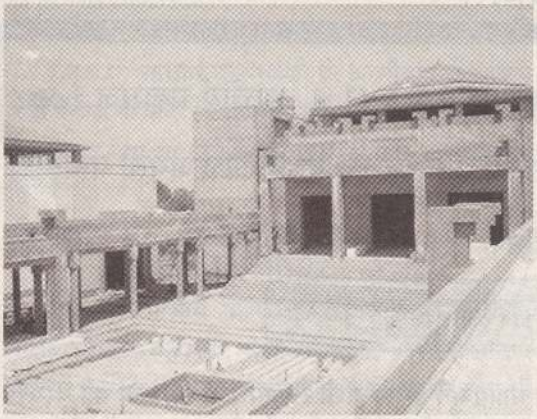
कार्यक्रम

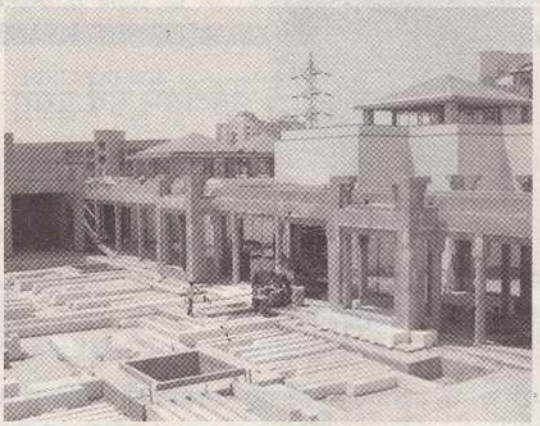
भगवान का महाभिषेक	:	प्रात: ७-०० बजे
शृंगार आरती	:	प्रात: ८-३० बजे
प्रागट्य जयंती उत्सव	:	प्रात: ८-३०से १०-०० बजे
संत - हरिभक्तों द्वारा स्वागत	:	प्रात: ११-३० बजे
अन्नकूट-आरती	:	दोपहर १२-०० बजे

आयोजक : दंढाव्य प्रदेश के समस्त गाँवो के हरिभक्त
महोत्सव का प्रत्यक्ष दर्शन : www.mahesanadarshan.com

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

- तुषार दवे





जयश्री स्वामिनारायण - विश्व के सभी देशों में हिन्दुस्तान एक ऐसा विशिष्ट देश है जहाँ पर अनेकों अवतार हुये हैं। इसके साथ इस पवित्र भारत भूमि पर सर्व अवतार के अवतारी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण साधुजनों की तथा धर्मिष्ठो की आर्तनाद सुनकर पृथ्वी पर अवतरण किये थे.

छपैया गाँव में लीला करके नीलकंठ वर्णीरुप में संपूर्ण भारत वर्ष से विचरण करते हुये गुजरात में आये यहीं पर रामानंद स्वामी से भेट हुई। उन्होंने अपनी गद्दी सहजानंद स्वामी को दे दी। उस गादी को प्राप्त करके अपने अवतार लेने के रहस्य को समाज के सामने प्रगट किया।

समग्र जीव मात्र का कल्याण करने के लिये उन्होंने स्वामिनारायण धर्म की स्थापना की।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि हिन्दुस्तान में बहुत सारे धर्म है लेकिन स्वामिनारायण धर्म प्रशंसनीय, शुद्ध एवं आकर्षक है। हमें इस धर्म पर बहुत सम्मान है।

भारत के पूर्व गृहप्रधान मंत्रीश्री गुलजारीलालनंदाने कहा था कि भगवान स्वामिनारायण ने जो अहिंसा धर्म प्रवर्तित किया है वह जगत में सर्व श्रेष्ठ अहिंसाधर्म है। उस असाधारण सिद्धांत से प्रभावित होकर मेरा मन भी रुपान्तरित हो गया है। मनुष्य जब मनुष्य को ही नहीं सहन कर सकता तो धर्माचरण की वात क्या करना ?

परंतु सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से हम सभी में सच्चा धर्म, सद्भाव, शुद्ध आचरण टिका हुआ है। लेकिन वह कहाँ तक ? कलियुग का प्रभाव आनेवाली परंपराओं पर पड़ा तो सही। हमें जागरुक हो जाना चाहिये। अन्यथा आनेवाली परंपरा की क्या स्थिति होगी यह कल्पनातीत विषय है। तो क्यां करना चाहिये - जिससे जन्म-मरण के फेरे में से मुक्ति मिले तथा श्रीहरि की कृपा से अक्षरधाम की प्राप्ति हो। इसके लिये आवश्यक यह है कि श्रीहरिने जो उपदेश (आज्ञा) दिया है उसी का अक्षरशः पालन करें। सभी धर्मो से अलग अपना सांप्रदायिक धर्म (व्यवस्था) है वह है सत् शास्त्रों की स्थापना, मंदिरों का निर्माण तथा आचार्य परंपरा। भगवान स्वामिनारायण ने गुरुपद पर अपने स्वरुप की स्थापना करके अपने प्रत्यक्ष रहने का वचन दिया जो आज हम सभी के समक्ष विद्यमान है। यही एकमात्र जीव कल्याण का प्रशस्त मार्ग है।

बड़े महाराजश्री के जीवन कवन से हम सभी को जो अनुभूति हुई है वह इस कलियुग में भी प्रभु के नजदीक जाने के लिये तथा आत्मशांति के लिये श्रेष्ठ उपाय है। परमकृपालु श्रीहरि की प्रत्यक्ष अनुभूति इस पामर जीव से संभव नहीं थी इसलिये प.पू. बड़े महाराजश्रीने जीव मात्र का कल्याण करने के लिये तथा प्रत्येक भक्तको श्रीहरि की प्रत्यक्ष अनुभूति हो इसलिये तथा इहलौकिक - पारलौकिक सुख प्राप्त हो इसलिये भी श्री स्वामिनारायण म्युजियम का संकल्प किया। इस म्युजियम को श्रीहरि की प्रसादी के अलभ्य वस्तुओं का संग्रह स्थान बनाया जा रहा है। भगवान श्री स्वामिनारायण का अंश जिसमें हो ऐसे पू. बड़े

महाराजश्री का यह संकल्प है । इस संकल्प में सभी का मोक्षद्वार है। भगवान के अलौकिक चमत्कारिक इन प्रसादी की वस्तुओं के दर्शन मात्र से जीवमात्र में श्रीहरि के प्रति प्रेम बढेगा तथा अक्षराधिपति की प्राप्ति होगी । हम यह जानते हैं कि इस पवित्र कार्य के लिये प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री का खूब सहयोग मिला है।

अहमदाबाद के नारायणपुरा में टर्फ स्कुल के सामने इस भव्यातिभव्य म्युजियम का निर्माण कार्य हो रहा है । परंतु यह कार्य बड़ा कठिन है, मेहनत वाला है, जिसे पू. बड़े महाराजश्री स्वयं अपने हाथ में लिये हुये हैं । म्युजियम की कुल जमीन ३१००० वार जितनी है । जिसमें ३०००० स्के. फूट मुख्य म्युजियम तथा ३५००० स्के. फूट गेस्ट हाउस तथा हेड ओफिस का कंस्ट्रक्शन होगा । इस तरह करीब पौने दो लाख स्के. फूट का निर्माण कार्य होगा । इस समय इसकी कुल कींमत ३० करोड रुपये हैं । यहाँ पर अलग-अलग ८ ब्लोक तैयार होगे । ५ नंबर का ब्लोक म्युजियम का होगा ।

यहाँ एक ओडिटोरीयम भी बनेगा । इसमें भगवान की प्रसादीकी वस्तुये तथा महिमा से संबन्धित फिल्म दिखाई जायेगी ।

अंतिम ब्लोक में प्रसादी की प्रतिकृति होगी । जिसमें संप्रदाय की पुस्तकों तथा अन्य वस्तुओं का वितरण होगा ।

भगवान के वंशज का यह संकल्प कोई साधारण नहीं है । जिस में भगवान की स्वयं इच्छा हो तथा स्वयं पू. बड़े महाराजश्री की सूक्ष्म दृष्टि तथा कार्य कुशलता हो वह म्युजियम भूतो न भविष्यति बनकर रहेगी । कन्स्ट्रक्शन की दृष्टि से विश्व कक्षा का यह कार्य हो रहा है । प्रत्येक ब्लोक एरकन्डीशन तथा प्रत्येक ब्लोक की दीवाल डबल बोल इन्स्युलेटेड बन रही है । इसका स्लेप भी इन्स्युलेटेड बन रहा है।

मीमीमम खिड़कियां भी डबल ग्लेज्ड इन्स्युलेटेड बन रही हैं । सभी कंस्ट्रक्शन का कार्य अहमदाबाद के तापमान को ध्यानमें रखकर किया जा रहा है । सभी डीस्प्ले एवं प्रदर्शन को सरलता से समझा जा सके इसके लिये अद्यतन टेक्नोलोजी, साउन्ड सीस्टम, एनीमेशन विन्डो स्क्रीम सीस्टम लगाया जा रहा है।

यहाँ स्पेश्यल एक बोर्ड बनाया जा रहा है जो प्रीझर्वेशन सिस्टम का है।

भगवानने जिन वस्तुओं का उपयोग किया था उन चमत्कारिक प्रसादी की वस्तुओं के रखरखाव हेतु प्रीझर्वेशन एवं लेबोरेटरी तैयार की जायेगी ।

इस समय पू. बड़े महाराजश्री अपने आराम तथा स्वास्थ्य की चिंता छोड़कर रातदिन बड़ी सूक्ष्मता से म्युजियम के कार्य में अपना समय दे रहे हैं। यह कार्य सभी जीवों के कल्याणार्थ कर रहे हैं।

प्रत्येक समाज एवं संप्रदाय की एक परंपरा होती है । सर्वावतारी श्रीहरि के उपयोग में ली गई प्रसादी की सभी वस्तुयें यदि सम्हाली न जाय तो कालांतर में नाम शेष रह जायेगीं । जिससे आने वाली परंपरा अलभ्य लाभ से वंचित रह जायेगी । प्रभु तो करुणा के सागर है । रामानंद स्वामी के अंतिम समय में सहजानंद स्वामीने वरदान मांगा था कि (१) आपके भक्त को बिच्छु डंक की पीड़ा हमारे रोम रोम में हो लेकिन भक्त को न हो । (२) आपके भक्त की भाग्य में रामपात्र (भीख मांगने) का अवसर आवे तो वह मुझे मिले लेकिन भक्त को अन्न वस्त्र की कमी न रहे।

आज तक ऐसा कोई अवतार लेने वाले भगवान ने इस प्रकार भक्तों के प्रारब्धस्वयं भोगने की बात नहीं की है । ऐसे करुणा के सागर प्रगट प्रभु के संकल्प के विषय में कहने की हमारी क्या ताकत ?

परंतु हम अपनी धरोहर के समान प्रसादी की वस्तुओं का रख रखाव नहीं करेंगे तो आनेवाली परंपरा धर्म से विमुख हो जायेगी । भौतिक सुख के जाल में फंसकर वे आस्तिक वृत्ति छोड़कर अन्य मनस्क हो जायेंगे, इसलिये इन धार्मिक भावनाओं से बंधरहने पर ही इस कलिकाल में वे आकृष्ट हो सकेंगे । बड़े महाराजश्री तथा वर्तमान आचार्य महाराजश्री का यह संकल्प तथा उनके अथक परिश्रम को देखकर हमें भी उनके प्रत्येक कदम से कदम मिलाकर चलने में हित है । हम पामरजीव है समझ की कमी संभव है अतः पू. महाराजश्री जैसी आज्ञा दे उसी में हित है । यह अवसर मिला है - म्युजियम के माध्यम से जो भी संभव हो वह सेवा कर लेनी चाहिये । इसलिये तन, मन, धन से संकल्पित होकर महाराजश्री की आज्ञा को शिरोधार्य करना चाहिये । प्रगट ब्रह्मस्वरुप श्रीहरि के कृपापात्र बनने का यह सुनहरा अवसर मिला है, इसे जाने नही देना चाहिये । श्रीहरि पू. महाराजश्री के रुप में आज भी विद्यमान है । उन्हीं का यह संकल्प म्युजियम है अतः यत् किंचित सहयोग करके उदाहरण रुप बनें ।

Come, Let*f*s Get united, do get united with our Shri Hari.



इष्टदेव में समर्पित होकर महिमा के साथ जो निश्चय रखे वह परम पद को प्राप्त करता है

- जयंतीभाई के. मोदी (मेमनगर)

भगवान की महिमा के साथ दृढ निश्चय न हो तो उसे नपुंसक जानना चाहिये । उसका कभी उद्धार नहीं होगा चाहे कितना ही भागवत गीता सुनता रहे।

व्रत, तप, नियम, सत्संग, नवधा भक्ति, ध्यान इत्यादि द्वारा श्रीहरि को प्रसन्न करने की उपाय करते हैं, लेकिन भगवान के साथ कितने लोगों का सबन्धहै। अथवा किस को हुआ है । प्र. ६२) के वचनामृत में भगवान श्री स्वामिनारायण ने संबन्धकी व्याख्या की है । जिसे भगवान के स्वरुप का यथार्थ निश्चय हुआ हो उसे ही भगवान के स्वरुप का संबंधकहा जा सकता है। इसलिये जिसे किसी के साथ जैसा संबन्धहो वैसा गुण उसमें आता है । भगवान के साथ संबंधकरें तो कल्याणकारी गुण आता है। फिर वह भक्त भगवान की तरह समर्थ बन जाता है।

यथार्थ आज्ञा का पालन करने वाला तथा नवधा भक्ति से युक्त भक्त को भगवान इसी जन्म में मुक्त कर देते हैं । भगवान के यथार्थ निश्चय के विना जीवन भले, नियम, सत्संग, नवधा भक्ति करे तो उसे गुण बुद्धिवाला ही कहा जायेगा । जब तक यथार्थ निश्चय न हो तब तक कल्याण संभव नहीं है। भगवान के निश्चय के बाद ही स्वरुप हृदय में अडिग रहता है।

(१) सर्व प्रथम भगवान श्री स्वामिनारायण को सर्वोपरिता को समझना चाहिये।

श्रीजी महाराज जीव कोटि, माया कोटि, ईश्वर कोटि, ब्रह्म कोटि, अक्षर कोटि से परे है । सभी अवतारो के अवतारी हैं। सभी कारणों के कारण है। यही वात श्रीजी महाराज ने अहमदाबाद के ७ वें वचनामृत में कहा है। सर्वोपरि भगवान ऐसा मै अकेला ही हूँ। अन्य सभी छोटे बड़े मेरे अवतार है।

(२) भगवान का सगुणपना तथा निर्गुणपना समझना पड़े : पुरुषोत्तम नारायण के अन्वय स्वरुप को सगुण-निर्गुण जानना चाहिए।

निर्गुणपना : भगवान की अन्वय शक्ति है । तभी जीव कोटि ईश्वर कोटि, ब्रह्मकोटि, अक्षरकोटि के रुप में दृष्ट होते हैं। इसी अन्वय रुप से सभी के कारण भी है। श्रीजी महाराज तो उस तेज का भी कारण होने से कारण का कारण कहा गया है। यद्यपि यह तेज निर्गुण होकर सभी कोटियों में व्याप्त होकर भी सूक्ष्म प्रकाश से युक्त है ।

सगुणपना : श्रीजी महाराज के इस तेज का दूसरा लक्षण यह है कि यही तेज सगुणरुप में अष्टावरण से

युक्त होकर अनंतकोटि ब्रह्मांड, ईश्वर, ब्रह्म, अक्षर इत्यादि में अन्वय शक्ति से तेज द्वारा धारण करते हैं। स्वयं क्षर अक्षर से न्यारे हैं।

(३) भगवान का अन्वय व्यतिरेक समझना - इस स्वरुप में वास्तविकता क्या है?

भगवान श्री स्वामिनारायण अपने एक ही दिव्य स्वरुप से अक्षरधाम में दिव्य मुक्तों के साथ रहते हैं। (लोया ४ वचना.) यही उनका मूल रुप है। जिसे व्यतिरेकरुप कहा जाता है। जब श्रीजी महाराज, जीव, ईश्वर, ब्रह्म, अक्षर में अपने तेज द्वारा विराजमान हैं। जो श्रीजी महाराज का अन्वय रुप कहा जाता है। इस तरह अक्षरधाम में मूलरुप से व्यतिरेक स्वरुप तथा उनके तेज को अन्वय स्वरुप कहा ज्ञाता है.

(४) महाराज को कर्ता - अकर्ता, अन्यथाकर्ता समझना चाहिये :

कर्तापना : मूल अक्षर द्वारा की गयी सृष्टि में स्वयं किसी भी प्रकार की नीति-नियम विना किसी भी कार्य को करने में समर्थ। इसे अन्यथा कर्तापना कहा जाता है। जिस तरह अक्षरधाम के विना भी अपने मुक्तों के ऐश्वर्य द्वारा भी समर्थ कहा जाता है। अर्थात् मुक्तों को अपनी मूर्ति में बिलीन करके स्वयं स्वराड अकेले विराजमान रहते हैं, इसलिये महाराज में अन्यथा कर्तापना भी है।

(५) अवतार अवतारी भेद :

अवतार : भगवान अपनी अन्वय शक्ति (तेज) द्वारा प्रधानपुरुष, मूल पुरुष या प्रकृति पुरुष इन तीनो में एक ही साथ आविर्भाव होते हैं। इसी लिये वे पुरुष भगवान के अवतार कहे जाते हैं। यह अन्वय स्वरुप अवतार है। जब भी प्रभु को स्वयं पृथ्वी पर अवतार लेना पड़ता है। तब प्रभु व्यतिरेक स्वरुप में स्वयं रहते हैं। वही अवतारी है। स्वतंत्र है। सभी के स्वामी है। नियंता है, सभी कारणों के कारण है। वे ही अपने इष्टदेव है।

(६) मनुष्यभाव तथा दिव्य भाव को समझना :

मुनिके भाव में स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी ने प्रश्न पूछा कि जिसे भगवान का निश्चय हो, भजन स्मरण करता हो, लेकिन भगवान का मनुष्य चरित्र देखकर संशय होने में क्या कारण है? (पंचाला ४ वचनामृत)

प्रत्येक शास्त्र में भगवान का मनुष्य स्वरुप तथा दिव्य स्वरुप का वर्णन आता है। इन दोनो स्वरुप का स्मरण करके जिसे दृढ निश्चय हो जाय उसे कभी संशय नहीं होता।

भगवान जब मनुष्य रुप धारण करते हैं तब बालक के रुप में होना, युवान होना, वृद्ध होना, मर जाना इसके साथ ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, स्वाद, राग, द्वेष इत्यादि दिखाई देता है। कभी दिव्य भाव भी दिखाई देता है। इन सभी में भाव रखकर निश्चय हो तो कभी संशय नहीं होता। धाम की मूर्ति तथा प्रतिमा की मूर्ति में कोई अंतर नहीं होता। उपरोक्त वातों को हृदय में उतारकर सर्वोपरि स्वरुप में दृढ भाव आजाय तो ही आत्यंतिक कल्याण संभव है। इस तरह महाराज के सर्वोपरि स्वरुप का निरुपण करना ज्ञान यज्ञ कहा जायेगा। वृत्ति को वापस करना योग यज्ञ है। इस तरह यज्ञ करके जीव वृद्धि को प्राप्त होता है।

नूतन वर्ष के डट्टे का प्रकाशन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी के मार्गदर्शन में सुंदर कलात्मक तिथि-त्यौहार, उत्सव, पाटोत्सव की जानकारी से युक्त डट्टा का प्रकाशन किया गया है। प्रत्येक हरिभक्त डट्टा को अपने मंदिर के साहित्य केन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं।

तीर्थविधिनिरुपण

- पटेल अमृतलाल हीरजीभाई (लखतर)

श्री स्वामिनारायण भगवान सिद्धपुर पधारे । सरस्वती नदी के किनारे निवास किये । सरस्वती नदी तथा विन्दु सरोवर में स्नान किये । अपने आश्रित गृहस्थों से ब्राह्मणो को दान दिलवाये । चैत्र शुक्ल पूनम को बड़ा उत्सव किये । यह उत्सव रात्रि में सरस्वती नदी के किनारे किये । सभा में सभी को सम्बोधित करते हुये कहे कि सिद्धपुर उत्तम तीर्थ है । बिन्दु सरोवर में कर्दमऋषि तप किये थे। उन्ही के तप से प्रसन्न होकर परमात्मा ने दर्शन दिया था । ऋषि के प्रेमवश होकर प्रभु की आंखों से अश्रु बिन्दु गिरा जिससे इस सरोवर का बिन्दु सरोवर पड़ा । कर्दम देवहुति को सांख्ययोग का उपदेश किये थे । देवहुति माता को यहीं पर सिद्धि मिली थी, इसीलिये सिद्धपुर कहा जाता है । इसलिये इसतीर्थ का सेवन सभी को करना चाहिये । यदि विधिअनुसार यहाँ की यात्रा की जाय तो यथार्थ फल मिलेगा ।

पांच व्यक्तियों को तीर्थ का फल नहीं मिलता । जिसमें श्रद्धा नहीं हो, पापी हो, नास्तिक हो, शंकाशील हो, कुतर्क स्वभाव वाला हो ऐसे स्वभाव वाले को तीर्थ का फल नहीं मिलता । जो पुरुष काम, क्रोध, लोभ जीतकर जो यात्रा करे उसे सम्पूर्ण फल मिलता है । जिसका हाथ, पैर सही सलामत (संयमित हो) जिह्वा पर संयम हो, जिसका मन प्रभु के सिवाय अन्यत्र कहीं नहीं जाता, जिसका तप नियमित हो, जिसका शास्त्र पठन नियमित हो वह तीर्थफल को प्राप्त करता है । किसी को दुःखी न करनेवाला जो कपटी नहो, सत्यवादी, व्रतनिष्ठ एवं आत्म बुद्धिवाला हो तो तीर्थ का सम्पूर्ण फल प्राप्त करेगा ।

तीर्थ में उपवास करना चाहिये । मुंडन करना चाहिये । साडिंड श्राद्ध करना चाहिये । शक्ति के अनुसार दान करना चाहिये । तीर्थ में जाने वाला व्यक्ति ब्रह्मचर्य पालन करे एवं व्रती रहे । जिसके पिता जीवत हों या जिसकी पत्नी जीवित हो वह मुंडन न करावे । जो मुंडन करा लिया हो और वर्ष के भीतर पुनः जाना पड़ा तो वह भी न करावे । उस तीर्थ में रहनेवाले ब्राह्मणों की परीक्षा नहीं लेनी चाहिये । तीर्थ में मुख्य देव का पूजन शक्ति के अनुसार करना चाहिये । साधु पुरुषों की सेवा करनी चाहिये । ऐसा करने से भी सभी दान का फल मिलता है ।

हे सज्जनो ! पवित्र तीर्थ में जाकर जो दान, पुण्य, जप, तप करता है उसे हजार गुना अधिक फल मिलता है । इसी तरह तीर्थ में किया हुआ पाप हजार गुना हो जाता है । घर में किया गया पाप तीर्थ में जाने से नष्ट हो जाता है । तीर्थ में किया हुआ पाप वज्रलेप हो जाता है । इस का कोई प्रायश्चित नहीं है । हे भक्तजनों ! तीर्थमें जाने वाले नियम का पालन अवश्य करें । देवव्रत, मनुष्यव्रत इसका पालन करना । जो मनुष्य तीर्थ में जाकर पैसे होते हुये भी दान-पुण्य नहीं करता और दूसरे की गुप्त बात जिस्-किसी को कहता रहता हो, अतिनिर्दयी हो, लोभी हो, दंभी हो, विषय लोलुप हो, ऐसा व्यक्ति सभी तीर्थों में स्नान करने पर भी मलिन ही है । शरीर धोने से मनुष्य पवित्र नहीं होता । लेकिन मन के मैल को धोने से पवित्र होता है । इसलिये तीर्थ में मन को वश में रखना आवश्यक है । जिन लोगों ने तीर्थ में जाकर पाप किया हो ऐसे स्त्री पुरुष तीर्थ में भूत प्रेतादि होकर रहते हैं । जो तीर्थयात्रा करने वाले में छिद्रान्वेषण करता है उसमें वे भूत प्रेतादिक प्रवेश करजाते है । भूत-प्रेतादि प्रवेश वाले स्त्री-पुरुष परस्पर पाप करते हैं । हिंसा करते हैं । इसलिये हमारे आश्रित सावधान होकर नियम पूर्वक तीर्थयात्रा करें । तीर्थ में जाने वाले विशेषरुप से क्रोधको जीते तथा ब्राह्मण आपत्काल सिवाय दान ग्रहण न करे, दान तप, तेज दोनों का नाश करता है । गलत नहीं बोलना, हिंसा नही करना, स्नान-संध्यादिक नित्यकर्म, पूजन, कथाश्रवण, कीर्तन, दान,

साधु भोजन, जप, पाठ तथा पवित्र आचरण से तीर्थ में समय बिताना चाहिये । परमात्मा की वाणी सुनकर भक्तजन खूब प्रसन्न हुये और कहने लगे हे प्रभु ! आप जैसा कह रहे हैं हम वैसा ही करेंगे ।

जो भगवान के दास हो गये हैं उन्हे कुछ करने के लिये अवशेष रहता नहीं है । उनके दर्शन से अन्य का कल्याण होता है । लेकिन भगवान का दासपना आना बड़ा कठिन है । इसलिये कि जो भगवान के दास होते हैं वे शरीर को मिथ्या मानते हैं । आत्मा को सत्य मानते हैं । जो भी पदार्थ है वह अपने लिये नहीं बल्कि भगवान के लिये हैं ऐसा जो मानते हैं वे हरि के दास कहलाते हैं । अपने स्वामी की इच्छानुसार अपना जीवन समझते हैं उन्हें ही दास कहना चाहिये ।



भगवान के अवतार का हेतु

- निलेश भगत गुरु शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (महंत)

इस भारत भूमि पर अनेकों अवतार हुये - जिसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, राम, कृष्ण इत्यादि । इन अवतारों का क्या रहस्य है ? प्रभु को अवतार लेने का क्या कारण हो सकता है । यदि ऐसा कहा जाय कि भगवान अधर्म का नाश करके धर्म का स्थापन करने के लिये अवतार धारण करते हैं । तो यह कार्य वे अपने धाम में रहकर भी कर सकते हैं ।

एक समय स्वामिनारायण भगवान सभा में बैठे थे । बगल में संत बैठे थे । उसी समय महाराज मुक्तानंद स्वामी से पूछे कि स्वामी आप में कितनी ताकत है । तब मुक्तानंद स्वामी ने कहा महाराज आपकी कृपा से मुझमें इतनी ताकत है कि मैं हाथ नीचे करुँ तो पृथ्वी का सर्जन हो सकता है और हाथ ऊपर करुं तो पृथ्वी का विसर्जन हो सकता है । यदि इतनी शक्ति संत में हो तो भगवान को इस पृथ्वी पर अवतार धारण करने की जरुरत है क्या ?

इसके उत्तर में संत कहते हैं कि भगवान तो केवल भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने के लिये पृथ्वी पर अवतार धारण करते हैं । इसके अनेकों उदाहरण अपने संप्रदाय में मिलते हैं । उसमें एक उदाहरण यहां लिखते हैं ।

भागवत में एक सुंदर प्रसिद्ध कथा है । जब भगवान बलीराजा के यज्ञ में गये उस समय भगवान का सुंदर सुहावना ब्राह्मण बटु रुप देखकर बलीराजा की बहन के मन में संकल्प हुआ कि ऐसा बालक यदि मेरा पुत्र हो तो मैं उसे अपना स्तनपान कराउँ । ऐसा संकल्प मन में हुआ कि यह वात भगवान जान गये और कहे कि इस जन्म में मैं आपका संकल्प पूरा नहीं कर सकता लेकिन दूसरे अवतार में मैं आपका संकल्प अवश्य पूरा करुँगा ।

इसलिये अगले अवतार में भगवान श्री कृष्ण के रुप में अवतार लेकर बलीराजा की बहन भी पूतना के रुप में भगवान के पास आती है और अपने स्तन का पान कराया, उसे भी यशोदा मैया की तरह परम गति प्रदान कर दिया । इसलिये कहा गया है कि भगवान तो केवल इस पृथ्वी पर भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने के लिये अवतार धारण करते हैं ।

अंत में श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना की, अवतार धारण का यथार्थ ज्ञान समझने की शक्ति हमें दे ।

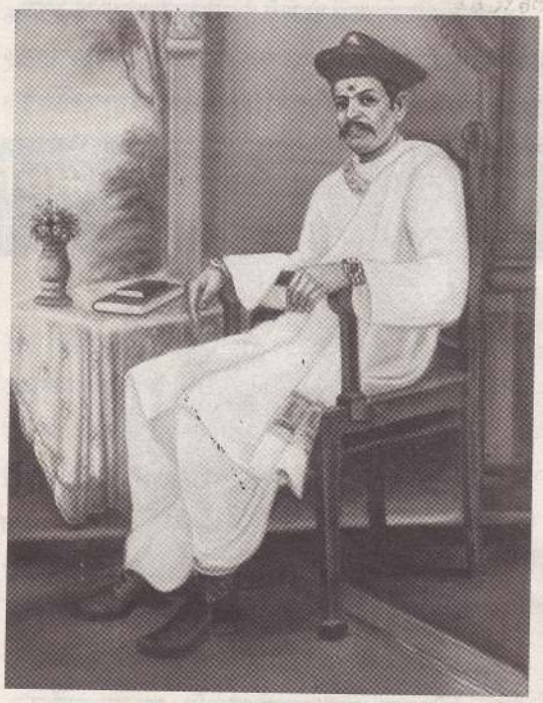
सभी शुभ गुणो से युक्त, तीक्ष्ण बुद्धि वाले पूज्य आचार्य महाराज श्री वासुदेवप्रसादजी

प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा प्रस्थापित आचार्य पद पर प्रत्येक आचार्यों में विशिष्ट शक्तियों का दर्शन होता रहता है। इस पद की गरिमा सभी के लिये हैं। इससे मात्र सत्संगियों में ही नहीं बल्कि जन-जन के हृदय में दिव्य स्थान है। धर्माचार्यो में सुमेल कराने में बुद्धिमान, वर्णाश्रम का उद्धार करने वाले, सभी विद्या शाखाओं से युक्त पूज्य श्री वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री अहमदाबाद देश के पीठ पर चौथे आचार्य थे।

संप्रदाय के इतिहास में अविस्मरणीय घटना तो इस तरह की है कि तीसरे आचार्य श्री पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराजश्री अपने अक्षरनिवास से पहले गोंडा जिला के कोर्ट में इस तरह का दस्तावेज करवा दिया कि मेरे स्थान पर मेरा अनुगामी मेरे पुत्र श्री वासुदेप्रसादजी रहेंगे। उन्हे अपने अंतकाल की समीपता का अंदाज लग गया था। संवत १९५८ कार्तिक कृष्ण अमावास्या के दिन अक्षरवास हो गया। उस समय श्री वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री अढाई वर्ष के ही थे। उसी समय उनका गादी अभिषेक कर दिया गया। परंतु पुख्त अवस्था होने पर संवत् १९७३ में व्यवस्था संभाल लिये। श्री वासुदेवजी का जन्म सं. १९५५ आषाढ शुक्ल-९ के दिन हुआ था। आचार्य के रुप में गादी अभिषेक वडताल के आचार्य श्री लक्ष्मीप्रसादजी ने किया था। शेठ श्री अमृतलाल हरगोवनदास तथा शेठ श्री मंछाराम मयाराम भट्ट को गोंडा कोर्टने रीसीवर के रुप में नियुक्ति की थी।

श्री वासुदेवप्रसादजी का प्राथमिक अंग्रेजी शिक्षण कपडवंज के श्री मणीलाल छोटालाल त्रिवेदीने दिया। अखिल भारतीय स्वराज संघ का अधिवेशन सं. १९९२ में श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में हुआ उस समय मुंबई के वैष्णवाचार्य गोकुलनाथजी महाराज



अध्यक्ष थे। उन्हीं के बगल में श्री वासुदेवप्रसादजी महाराज के बैठने की व्यवस्था की गयी थी। उस समय सभा में संस्कृत में बोलना था। गिरिजाशंकर शास्त्रीने उन्हे संस्कृत में भाषण लिखकर दिया तो उन्होंने कहा यदि मैं आप का लिखा तैयार करके बोलूं तो आपकी पढाई विद्या किस काम में आयेगी, इस लिये मुझे जो आता रहेगा स्वयं संस्कृत में बोलूंगा। हुआ भी ऐसा। जब वे संस्कृत में भाषण किये तो सारी सभा स्तब्धरह गयी।

श्री वासुदेवजी का उपवीत संस्कार सं. १९६३ कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन हुआ . आप का विवाह संस्कार सं. १९७१ में पिलकिछा गांव के श्री राजाराम भाई की सुपुत्री जयंतीदेवी के साथ हुआ था। शादी के सात वर्ष के बाद श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज का जन्म

हुआ था । महाराजश्री का जीवन सादगी से पूर्ण था । शरीर पर अलंकार - आभूषण धारण नहीं करते थे । मात्र किसी उत्सव विशेष पर लोगों के आग्रह पर धारण करते थे । उन्होंने अयोध्या में शिखरी मंदिर बनवाकर श्री राधाकृष्ण देव-हरिकृष्ण महाराजकी मूर्ति को प्रतिष्ठित किया । छपैया में श्री घनश्याम महाराज, प्रांतिज तथा मूली में श्री घनश्याम महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठित किया । बाली तथा बामरोली में मूर्ति प्रतिष्ठित किया । भुज में श्री राधाकृष्णदेव तथा हरिकृष्ण महाराजकी मूर्ति प्रतिष्ठित किया ।

उनका स्वभाव गंभीर होते हुए भी आनंदी था । संस्था की व्यवस्था बड़ी बारीकी से करते थे । प्राय: मंदिर की हवेली में रहते थे । स्वास्थ्य अनुकूल न होतो वाडी में रहते अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेव का शत वार्षिक पाटोत्सव सं. १९७८ फाल्गुन शुक्ल-३ को श्री वासुदेवप्रसादजी महाराज के वरद् हाथों संपन्न हुआ था । शिक्षापत्री प्रादुर्भाव उत्सव का शुभारंभ भी उन्ही के हाथों आरंभ हुआ था । छपैया में फ्लेग स्टेशन भी उन्होंने प्रारंभ करवाया था ।

अहमदाबाद में स्वास्थ्य प्रतिकूल होने से वे कुछ समय तक मूली में रहे । वहाँ से सं. १९९२ में मुबई उपचार के लिये जहा रहे थे उस समय मूली से विरमगाँव अहमदाबाद होकर मुंबई जाते समय अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर पू. लालजी महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री मिलने गये । पिता-पुत्र का मिलन काफी भावात्मक था । दोनों की आँखे भर गयी थी । अनेकों प्रयत्न होने पर भी सं. १९९३ में कार्तिक कृष्ण-१ को ३८ वर्ष की युवानीमें अक्षरधाम सिधार गये ।

अंतिम संस्कार नारायणघाट पर हुआ । श्री वासुदेवप्रसादजी महाराज के और्ध्वदैहिक प्रसंग पर अहमदाबाद के समग्र ब्राह्मणों का ब्रह्म भोज किया गया था । पूज्य वासुदेवप्रसादजी महाराज सं. १९५८ से सं. १९९३ तक अर्थात् ३५ वर्ष तक अहमदाबाद श्री

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में दीपावली का शुभकार्यक्रम

धनतेरस : आश्विन कृष्ण-१२ ता. १५-१०-०९ गुरुवार (द्वादशी सायंकाल ४-३० बजे उतर रही है) श्री लक्ष्मीपूजन धन्वतरी जयंती, ठाकुरजी के अलंकारो का परिमार्जन ।

काली चतुर्दशी : आश्विन कृष्ण-१४ ता. १७-१०-०९ शनिवार श्री हनुमानजी का पूजन-अर्चन प्रात: ८-०० बाद में नरक चतुर्दशी) समूह लेखा-जोखापूजन, शारदा पूजन, लक्ष्मीपूजन शाम ६-१५ अहमदाबाद मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कर कमलों द्वारा विद्वान ब्राह्मणो द्वारा संपन्न होगा ।

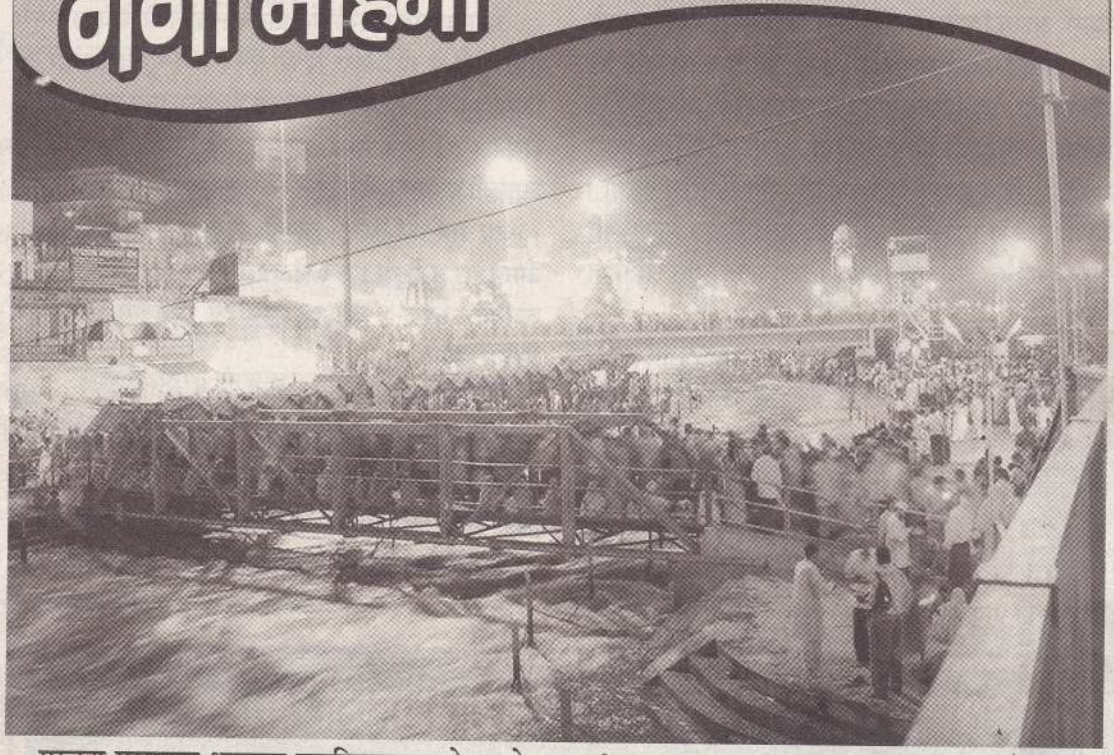
अन्नकूटोत्सव : आश्विन कृष्ण-३० ता. १८-१०-०९ रविवार गोवर्धन पूजा प्रात: ९-०० बजे, अन्नकूटोत्सव आरती दोपहर में १२-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न होगा ।

अन्नकूट दर्शन १२-०० से ४-३० तक (प्रतिपदा के दिन चन्द्र दर्शन होने से)

नूतन वर्ष : कार्तिक शुक्ल-१ ता. १९-१०-०९ सोमवार सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती प्रात: ५-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री उतारेगे । बाद में अपने कक्ष में प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ दर्शन देंगे । इसके साथ ही गादीवालाजी हवेली में बहनों को दर्शन का लाभ देंगी ।

गंगा महिमा

- विद्यार्थी साधु व्रजभूषणदास
गुरु श्यामसुंदरदासजी (हरिद्वार)



परब्रह्म परमात्मा भगवान स्वामिनारायण ने अपने भारत वर्ष में जन्म लेकर अनेकों जीवों का कल्याण किया है । भारतवर्ष तीर्थो का तथा आध्यात्म का अनमोल खजाना है । भारत में अनेकों तीर्थ हैं उसमें से ऐसे भी तीर्थ है जिसके विषय में कवियों ने तथा लेखकों ने खूब लिखा है । भारत के ६८ तीर्थ मुख्य है । इस में चार धाम तथा सात पुरी मुख्य है । बद्रिनाथ, रामेश्वर, जगन्नाथपुरी तथा द्वारिका चार धाम है । अवंती, काशी, अयोध्या, मायापुरी, मथुरा, कांची, द्वारावती ये सात मुक्तिपुरी है । इसमें उत्तराखंड में अनेकतीर्थ हैं, उसमें से हिमालय तीर्थ का वर्णन करते हैं ।

काका कालेलकर "मेरा हिमालय का प्रवास नामक पुस्तक में सुंदर वर्णन किया है । कवि कालिदास ने भी संस्कृत काव्यों में हिमालय का वर्णन किया है । शतानंद स्वामी ने सत्संगीजीवन में तथा निष्कुलानंद स्वामीने भक्त चिंतामणी में हिमालय का सुंदर वर्णन किया है । पहले हिमालय उत्तर भारत में आता था अब उत्तरांचल के रुप में अलग कर दिया गया है । भारत में घोर कलियुग होते हुये भी हिमलायमें आज भी सतयुग जैसी स्थिति है । १५ सौ कि.मी. चौरस एरिया में हिमालय फैला हुआ है । भारत के उत्तर में हिमलाय है । दूसरी तरफ तिब्बत है । एक तरफ चीन भी जुड़ा है । ऐसा विशाल हिमालय तीर्थों का खजाना है । सर्व प्रथम राजा भगीरथ छ पीढी के तप के पश्चात गंगाजी को पृथ्वी पर ले आये । प्रथम कैलाश पर्वत पर भगवान शिवजी की जटा में गंगाजी आयीं । कैलास तथा अमरनाथ एवं कारगिल जैसे अनेक शिखर हिमालय में है । इस तरह वर्णन करते पार नहीं है । भगवान बद्रिनाथ का दर्शन करने जावें तो उससे पहले ९९९ वें शिखरों की पार करने पर ही बद्रिनाथ का दर्शन संभव है । वहाँ आज भी कलियुग का प्रवेश नहीं हैं ।

सर्व प्रथम हिमालय में हरिद्वार तीर्थ को मोक्ष का द्वार कहा जाता है । बद्रि-केदार जाने का मुख्य द्वार है । हरिद्वार

में दश हजार जितने आश्रम हैं। पचास हजार से अधिक महात्मा हैं। सभी भगवत् भक्ति में लगे रहते हैं। दुनिया दारी का उन्हें ख्याल नहीं। बहुत सारे संत गंगाजी के किनारे भजन करते रहते हैं। जिस तरह बालक अपनी मां की गोद छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहता उसी तरह साधु भी गंगा मां का किनारा छोड़कर कहीं नहीं जाते। दुनिया में कहीं शांति नहीं मिलती जो शांति गंगाजी के किनारे मिलती है। कारण यह कि गंगाजी भगवान विष्णु के चरण से निकली हैं। इसीलिये इन्हें विष्णुपदी भी कहा जाता है। भगीरथ के प्रयत्न से आयी इसलिये भागीरथी कहते हैं। सत्संगिजीवन में गंगा की महिमा का खूब वर्णन है। बैकुंठ से गंगा ब्रह्मलोक में स्वर्ग में, कैलाश में मानसरोवर में गोमुख में पश्चात् गंगाजी में आयी। जहाँ पर भगीरथ राजा तप किये थे। लाखो वर्ष बीत गये आज भी वह तप वाला पत्थर है। जिसका भक्त लोग दर्शन करते रहते हैं। गंगाजी गंगोत्री से ऋषि केश तथा ऋषि केश से हरिद्वार आयी। ऊपर से नीचे आते समय अनेकों नदियां का संगम होता रहता है। गंगा से मिलने को प्रयाग कहते हैं जिसमें से पांच प्रयाग प्रसिद्ध है - (१) केशव प्रयाग (२) विष्णु प्रयाग (३) कर्ण प्रयाग (४) रुद्र प्रयाग (५) देव प्रयाग। सभी नदियां मिलकर हरिद्वार आती हैं। जहाँ हरि की पैडी घाट आता है। वहीं गंगाकी आरती सायंकाल १०० दीपक वाली ३५ से ४० जितनी आरती उतारी जाती है। यह अलौकिक दर्शन ५० हजार से अधिक यात्री करते हैं। भारत में मनुष्य जन्म हुआ हो तो गंगा स्नान एकवार अवश्य करना चाहिए। गरीब व्यक्तियों को जो धनी व्यक्ति अपने पैसे से स्नान करवाता है तो भगवान उस पर खूब प्रसन्न होते हैं। कलियुग में गंगाजी साक्षात् प्रगट देवी हैं। सत्संगिजीवन में लिखा है कि हजारो योजन दूर से हे गंगा इस तरह जो महिमा समझ कर बोलेगा उसका पाप भस्म होकर राख हो जायेगा।

यह वात जिस तरह सोने में सुगंधमिल जाती है उस तरह की है। जब भगवान ने गंगाजी से कहा आप पृथ्वी पर जाकर लोगों का कल्याण करें तथा सभी का पाप धोयें। तब गंगा मां ने कहा प्रभु आप सभी के पाप को धोने की बात करते हैं तो सभी के पाप को लेकर हम कहाँ धोयेंगी। यह सुनकर भगवान ने कहा पापी लोगों के पाप का नाश जब बड़े-बड़े संत-महात्मा स्नान करेंगे तब सभी पाप नष्ट हो जायेंगे। पवित्र गंगाजी में स्वामिनारायण भगवान जब नीलकंठ वर्णी के रुप में वन विचरण कर रहे थे उस समय अनके तीर्थों को पावन करते-करते हरिद्वार पधारे तब गंगा मैया में स्नान करके शालिग्राम भगवान को स्नान कराया था। हरि की पौडी का घाट राजाभर्तहरि ने बनवाया था। जहाँ पर भगवान स्वामिनारायण ने अपने चरणरज से पवित्र गंगा को अतिपवित्र किया था। हरिद्वार में बहुत शांति मिलती है। जब हरिद्वार जायेंगे तभी इसका अनुभव होगा। सत्संगिजीवन में लिखा है कि गंगा का एक बूंद जल भी मरणासन्न व्यक्ति के मुख में जाय तो वह सद्गति को प्राप्त हो जाता है। आज भी लोगों के यहाँ कोई मरता है तो अगल बगल के घर से गंगाजल लाकर मुख में अवश्य डाला जाता है। जगत में यह एक ही ऐसी नदी है जिसका जल सैंकड़ो वर्ष तक रखा रहे तो भी दूषित नहीं होता। लेकिन किसी अन्य नदी का जल हो तो बिगड जाता है।

किसी भी धर्म का आश्रित हो लेकिन गंगा का महत्व तो उस को रहता ही है। गंगा की महिमा नंद संत तथा स्वयं महाराजने भी गाया है। हरिद्वार में आश्रम दर्शनीय है। जो हरिद्वार में जाकर स्नान करेगा उसके सभी पाप नष्ट हो जायेंगे।

जिस तरह दुनिया की मुख्य कचहरी होती है। जैसे भारत की मुख्य कचहरी दिल्ली है उसी तरह सभी धर्मो का मुख्य स्थान हरिद्वार है। वहीं पर श्री स्वामिनारयण संप्रदाय का श्री नरनारायणदेव अहमदाबाद देश गादी का श्री स्वामिनारायण मंदिर कनखल, शंकराचार्य चौक में आया हुआ है। वह मंदिर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज द्वारा प्रतिष्ठित किया गया है। जिसमें श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की स्थापना की गयी है। ऐसे मंदिर में बैठकर भजन करके सभी अपने मोक्ष द्वार तक पहुंच सकते हैं। करोड़ो काम छोड़कर मोक्ष सुधार लेना चाहिये। इस तरह स्वामी की वातों में लिखा है। तो बद्रिपति श्री नरनारायणदेव को प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! सभी को छपैयाधाम तथा हरिद्वार की यात्रा तथा गंगा स्नान का लाभ अवश्य दीजियेगा।

श्री नरनारायणं प्रति

डॉ. वाचस्पति मिश्र (स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर)

॥ हृद्गत भावः ॥

विनायकं प्रणम्यादौ नारायणं तथा परम् ।
नरं नारायणञ्चोभौ प्रणमामि पुनः पुनः ॥१॥

स्वयं भगवान साक्षात् रुपद्वयेन चास्थितः ।
स वै नारायणो ब्रह्म नरनारायणाभिधः ॥१॥

गीतायां यद्वचनमुक्तं श्रीकृष्णेन परमात्मना ।
जगत्यां समुत्तीर्णः लोकानुग्रहकांक्षया ॥३॥

श्रीनगरे स्थिते रम्ये शोभने दिव्य मंदिरे ।
स्वयमवातरत् साक्षात् नरनारायणः प्रभुः ॥४॥

नरस्य दक्षिणे भागे नारायणः विराजते ।
उभावपि स वै हृयौ शोभमानौ मनो हरौ ॥५॥

इदं तस्य देवस्य माहात्म्यं ज्ञात्वा ।
सदा राजमानां क्षराभाव मूर्तिं-
यदा श्रीहरिः लोककल्याण भावात्
मुदा मुह्यमानः प्रतिष्ठाञ्चकार ॥६॥

तदातः स्वयमत्र चागत्य नित्यम् -
सदा शोभते दीव्य मूर्तिः तदीया,
भगारुढकान्तिं प्रपश्यञ्जना वै
स्ववाञ्छा प्रपूर्य सुखमावहन्ति ॥७॥

चतुर्भुजरुपं प्रपश्यन् जना वै -
प्रलोलुभ्यमानः सदा ते भवन्ति ।
अहो ! वतावशिष्टं भुवस्तत्ले किम्,
भावे कुभावो वसति यत्र वै भोः ॥८॥

(१) भगवान विघ्न विनायक गणपति को प्रथम प्रणाम करके पश्चात् भगवान नारायण को प्रणाम करके तथा श्री नरनारायणदेव भगवान को बार-बार प्रणाम करता हूँ।

(२) स्वयं साक्षात् भगवान नारायण जो परब्रह्म परमात्मा हैं वे ही इस जगतीतल पर श्री नर नारायण के दो रुप में स्थित है।

(३) श्री कृष्ण परमात्माने गीता में जो वचन कहा

यदा यहा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे ॥

उसी वचन को पूरा करने के लिए तथा संसार के जीवों का कल्याण करने के लिये जगत में अवतरित हुये ।

(४) श्रीनगर (अहमदाबाद) जो रमणीयता अर्थात् आनंद का उद्भासक है ऐसे स्त्रीनगरमें, अनंत शोभाओं से सुशोभित दिव्य मंदिर में साक्षात् नरनारायण प्रभु स्वयं अवतरित हुये ।

(५) श्री नर भगवान के दक्षिण भाग में श्री नारायण भगवान विराजमान हैं । दोनो की मूर्ति हृदय में उतारने लायक है, नाना विधशोभाओं से अलंकृत है तथा मन को हरण करने वाली है।

(६) इस प्रकार श्री नरनारायण देव के माहात्म्य को जानकर जो अक्षरातीत है जो क्षर भाव से रहित हैं जो सदा देदीप्यमान अर्थात् जो सदा प्रकाशमान रहते हैं ऐसे मूर्तिमान स्वरुप में प्रसन्नता पूर्वक मुग्धहोकर श्रीहरि (श्री स्वामिनारायण भगवान)ने श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित कर दिया ।

(७) प्रतिष्ठित होने के बाद श्री नरनारायण भगवान स्वयं आकर इन दिव्य मूर्तियों में सुशोभित (प्रकाशित) हो रहे हैं । और भी ऐश्वर्य अर्थात् षडैश्वर्य सम्पन्न इस छटा को देखकर सभी भक्तजन अपनी इच्छाओं को पूर्ण करके सुख को प्राप्त करते हैं।

(८) भक्तजन उस अव्यक्त परमात्मा को व्यक्त चतुर्भुज रुप में देखकर लोभावनी उस मूर्ति को बार-बार देखते रहते हैं । अहो ! आश्चर्य तो यह है कि इन्हें प्राप्त करके अव इस जगत में अवशिष्ट क्या रहता है । हाँ अवशिष्ट है तो वह है उत्तम भाव में कुत्सित भाव का आना ।

(अर्थात जहाँ पर कुत्सित भाव है वहाँ पर परमात्मा का वास, सुख, शांति नहीं रहती हैं)

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

अपनी प्रशंसा से फूलना नहीं चाहिये

- शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

एक नगर में धनवान शेठ रहता था । उसका उत्तम व्यापार चलता था । बड़ा बंगला था । बहुत सारी गाडियाँ थी । बंगले में स्नानागार, खेलने कूदने का मैदान, झूला इसीतरह अद्यतन बहुत सारे उपकरण थे ।

वह शेठ इतना धनी था कि उसे रात दिन चोरी की चिंता लगी रहती । उसने विचार किया कि चोरी से बचने के लिये हमें कुछ करना होगा । एक दिन वह अपने कारखाने जा रहा था । रास्ते में एक कुत्ता देखा, वह बहुत अच्छा था । उसे घर ले आया । शेठ की चिंता थोड़ी कम हुई । कुत्ता शेठ के दरवाजे पर बैठा रहता । बड़ी सावधानी से चौकी दारी करता था । शेठ कुत्ते पर खूब प्रसन्न था । प्रतिदिन स्नान कराता, उत्तम भोजन देता, खूब देख भाल करता ।

थोड़े ही समय में वह कुत्ता खूब मोटा-स्वस्थ हो गया । शेठ का व्यापार बहुत बड़ा था इसलिये उसे मिलने प्राय: बहुत लोग आते थे । जो आवे उसकी नजर उस कुत्ते पर पड़ती । शेठ भी उस कुत्ते को साथ ही रखता था । आनेवाले शेठ को मस्का लगाने के लिये कहते कि शेठजी ? आप का यह कुत्ता वाघ जैसा है । यह सुनकर शेठ बहुत प्रसन्न होता ।

आने वाले सभी के मुख से यह सुनकर कुत्ते के मन में होने लगा कि सही में वाघ जैसा हूँ । धीरे धीरे कुत्ते के भाव में परिवर्तन होने लगा । पहले शेठ के सावधान करने पर सावधान होता था, अब तो स्वयं सावधान हो जाता था । अब शेठ के कहने पर कोई असर नहीं पड़ता था । शेठ को हुआ कि कुत्ता अब क्यों ऐसा करने लगा ।

एक दिन शेठ कुत्ते को दंड देना चाहा तो कुत्ता सामने हो गया । घुरकी देने लगा । शेठ को हुआ कि अब यह मेरे घर रहने लायक नहीं है । मेरा ही खाकर मेरे सामने घुरकी देने लगा है । शेठ उसे डंडा मारकर घरसे बाहर कर दिया । ज्यों ही शेठ के बंगले से वह बाहर निकला कि गांव के सड़कछाप कुत्ते उसे घेर लिये । चारो तरफ से लगे चोथने, अधमरा कर दिये । बाद में आऊँ आऊँ करके मर गया ।

बाल मित्रों ! इस कथानक से आप सभी को क्या ज्ञान मिला ? कभी भी अपनी प्रशंसा से फूलना नहीं चाहिये । आप में कोई अच्छी योग्यता हो और लोग प्रशंसा करते हों तो यह मानना चाहिये कि हमारे इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान की कृपा से योग्यता आई है । ऐसा मानने से उसमें नम्रता आयेगी, अहंकार नहीं आयेगा । लेकिन दुर्जन में योग्यता आजाय तो वह गर्विष्ठ बन जाता है । और दूसरों का अपराधकरने लगता है, अंत में उसका नाश होता है ।

•

अच्छे कार्य में सेवा करनी चाहिये

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवान मुमुक्षुजीवों के कल्याण के लिये अनेकों यज्ञ करवाये । उसमें एक बड़ी यज्ञ की बात है -

जेतलपुर में स्वामिनारायण भगवान ने जब सबसे बड़ी यज्ञ प्रारंभ की तो उसमें बहुत कठिनाई आयी, विरोधी भी बहुत थे। फिर भी भगवान बड़ी धैर्यता के साथ उस यज्ञ को पूर्ण किये । इसी लिये भगवान का एक नाम जनमंगल में अति धैर्यवान भी है ।

शतानंद स्वामीने काफी चिंतन के बाद ही प्रभु का एक नाम अतिधैर्यवान रखा । खाली धैर्यवान नहीं । धर्मवाले तो अनेकों भक्त थे । जिसका वर्णन निष्कुलानंद स्वामी ने धीरजाख्यान में किया है । लेकिन जेतलपुर के यज्ञ में तो श्रीहरि अतिधैर्य रखकर त्रासरुप दैत्यों को भी भोजन

कराये थे।

१८ दिन का यज्ञ था। प्रतिदिन गाँव-गाँव से भक्त जन यज्ञनारायण का दर्शन करने आते थे। यज्ञ में ११००० ब्राह्मण भोजन करते थे। प्रतिदिन प्रातः काल से ही ऊँ स्वाहा की ध्वनि से सारा आकाश गूंज उठता था। यज्ञ की पूर्णाहुति के समय हर हर महादेव के साथ सहजानंद स्वामी महाराज की जय ऐसा बोलकर महाप्रसाद में ब्राह्मण लोग लड्डु यज्ञ में होम की तरह खाते। यह देखकर कितने दुष्ट स्वतः नष्ट हो गये। सर्वत्र सहजानंद स्वामी की जय-जयकार होने लगी। वे सभी विचार करने लगे कि इनका ह्रास कैसे हो। उसमें से एक मूर्ख ने कहा कि तुम बहुत लड्डु खाते हो, इतना खा की उनका सब घट जाय। दूसरे ने कहा यह हेतु नहीं है। हेतु तो यह है कि स्वामिनारायण को इस गाँव से कैसे भगाया जाय, अन्यथा यहीं स्थिर हो जायेगा।

तो इसके लिये क्या करना चाहिये ? सभी ने निश्चय किया कि चलो एक साथ चलते है। हजारो लोगों का लड्डु बनवाये है वह भी देव सरोवर के किनारे है, इसलिये सभी लड्डु देव सरोवर में डाल देते हैं। वे सभी ऐसा ही किये सारी रात लड्डु को देव सरोवर में डाल दिये। यज्ञ की दूसरे दिन पूर्णाहुति थी। अंतिम दिन था। हजारों लोग खाने वाले थे। अब देखते हैं यह स्वामिनारायण कैसे, खिलाता है।

प्रातः काल सभी संत जब देव सरोवर स्नान करने गये तो उस समय उनके स्नान में पानी नहीं घी का चिकनापन था। वे सभी संत भीतर जाकर देखे तो पूरा देवसरोवर लड्डु से भर दिया गया है। किसी ईर्ष्यालु का यह कार्य होगा। इस बात को महाराज तक पहुँचायी गयी। अंतर्यामी दयालु इस रहस्य को समझकर हंसने लगे और संतो से कहे कि इस यज्ञ में अनेंको ब्राह्मणो को खिलाया, अनेको अभ्यागतों को देश-विदेश से आये हरिभक्तों को भोजन कराया। गाँव के पशु-पक्षी भी यज्ञीय अवशिष्ट भोजन से तृप्त हुये। लेकिन देव सरोवर के जलचर प्राणी को हम लोग भूल गये थे। प्रसाद उन्हें नहीं मिले तो उनका कल्याण कैसे होगा। यह कार्य जिसने भी किया वह बहुत पुण्य का कार्य किया है।

संत-भक्त सभी उपस्थितजन महाराज के इस अतिधैर्य वान गुण को देखकर खूब प्रसन्न हुये। सभी अपनी चिंता छोड़ दिये। जब श्रीहरि हैं तो चिंता की क्या जरुरत। बाद में स्वामिनारायण भगवानने ऐसा प्रताप दिखाया कि थोड़े बचे लड्डु में से सभी को भोजन कराकर तृप्त कर दिया। कोई कमी नहीं आयी। चारो तरफ जय जयकार हो गयी, और ईर्ष्यालु का मुंह काला हो गया।

सज्जनो !

बहुत गयी थोड़ी रही, व्याकुल मन मत होई।
धीरज सबका मित्र है, करी कमाई मत खोई॥

श्रीजी महाराज के इस पवित्र सद्गुण को जो अपने हृदय में धारण करे तो निश्चित ही वह ध्रुव, प्रहलाद, हरिश्चन्द्र, मुद्गल - महर्षि, रंतिदेव राजा जैसे धैर्यवान भक्त बनकर भगवान की प्रसन्ता प्राप्त कर सकता है।

अहमदाबाद मंदिर में परंपरागत समूह शारदा पूजन

श्रीजी महाराज के सभी सुज्ञ प्रिय हरिभक्तों को सहर्ष ज्ञान करना है कि सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से विद्वान पंडितो द्वारा अहमदाबाद मंदिर की प्रसादी के सभा मंडप में आश्विन कृष्ण-१४ ता. १७-१०-०९ शनिवार को सायंकाल ६-०० बजे समूह शारदा पूजन वेद विधिपुरस्सर धूमधाम के साथ संपन्न होगा। शारदा पूजन में लाभ लेने वाले धर्मप्रेमी व्यापारी अपने खाता वही की संख्या व नाम पता-फोन लिखकर लाल कपड़े में बांधकर कोठार की आफिस में जमा करके पक्की रसीद अवश्य लें।

खातावही स्वीकारने की अंतिम ता. १५-१०-०९ है। बाद में स्वीकार नहीं किया जायेगा। - कोठारी स्वामी

भक्तिसुधा

एकादशी सत्संग सभा के प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से

संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोडासर)

संसार का क्या अर्थ है ? संसार का अर्थ है जो भी चर्म चक्षु से ब्रह्म जगत जंगल, वृक्ष, नदी, तालाब इत्यादि दिखाई देता है वही बाह्य संसार है। बाहर की सृष्टि है। हम बाहर ही देखते रहते हैं। हमें आभ्यंतर जगत को देखना चाहिये। आत्मा- परमात्मा अपने अन्दर में विराजमान है। यहीं अन्तर का संसार है। किन्तु यथार्थ रुप में उस अंतर के संसार के पहचानने की अपेक्षा अन्य जो अतंर का संसार है वह यह कि तृष्णा, कामना तथा महत्वाकांक्षा उसी को व्यक्ति देखता है जिससे उसी में फंस जाता है। इस जगत का सुख क्षण भंगुर है। नाशवंत है। फिर भी मनुष्य इसमें फंस जाता है। अंतिम समय तक उसी में फंसा रहता है, बाहर निकल नहीं पाता। जिस तरह कोई हिरण किसी खेत में प्रवेश करे और बाद में प्रतिदिन प्रवेश करके फल-फूल-पत्ता खाता है उसे मजा आती है। जब खेत के स्वामी को पता चलता है तो वह उस हिरण को पकड़लेता है। हिरण छूटने का खूब प्रयत्न करता है। लेकिन असमर्थ बन जाता है। बाद में उसे ख्याल आता है कि स्वतंत्र जीवन को स्वयं परतंत्र बना दिया हूँ। इसी तरह मनुष्य जीवन में भी होता है। यह पृथ्वी हम सभी के लिए खेत की तरह है। यहाँ जन्म तो लेलिया लेकिन समय की मर्यादा कम होती है। इसका ख्याल किये बिना सांसारिक विषय वासना में खोजाते हैं। जब ख्याल आता है तब तक मृत्यु का समय नजदीक होता है और स्वतंत्रता खत्म हो जाती है - वह मृत्यु के पारतंत्र्य में जकड़ जाता है। इसलिये इस सामान्य चर्मचक्षु द्वारा बाहर की सृष्टि को न देखकर दिव्य चक्षु द्वारा अंदर के आत्मा-परमात्मा को देखने का प्रयत्न करना चाहिये। आत्मा परमात्मा ही अपनी अंतर्यात्रा है। जिस प्रकार किसी मंदिर में अंदर प्रवेश करने के लिये सीढी चढना पड़ता है। बाद में प्रवेश द्वार से परमात्मा का दर्शन संभव है। आत्मा ही प्रवेश द्वार है। आत्म तत्व दर्शन के बाद ही परमात्मतत्व का दर्शन संभव है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्व, प्रकृति इत्यादि आठ आवरण है। इन आवरणों को समझना पड़ेगा। मनुष्य इस संसार में इतना आसक्त है कि वह कुछ और भी है वह सोचता ही नहीं है। मात्र संसार के विषयों में आसक्त होकर उधर ही भागता रहता है। जैसे दश हजार, दश लाख इत्यादि के चक्कर में रात-दिन दौड़ता है। परमात्मा की तरफ दौड़ने का प्रयत्न नहीं करता। अंत में विशेष वात याद रखने लायक यह है कि अपने जीवन की आयु एक-एक दिन वीतती जा रही है इसलिये प्रतिदिन गणित करना चाहिये कि आज मैं कितना सही तथा कितना गलत किया हूँ।

प.पू. गादीवालाजी उपरोक्त आशीर्वचन में सरल दृष्टांत द्वारा इस संसार में परमात्मा तक किस तरह पहुँचा जा सकता है तथा संसार कैसा है, इस वात को इस तरह समझायी कि छोटी से छोटी सत्संगी को समझ में आ जाय। सत्संगी बहने भी अपनी वाणी का लाभ देती है। अंत में लिखना यह है कि लक्ष्मीस्वरुपा प.पू. गादीवालाजी अपने दिव्य संकल्प द्वारा एकादशी सत्संग सभा का आयोजन करके सत्संग गंगा को वहाकर सत्संगी बहनों के ऊपर दिव्य कृपा कर रही है। उसमें भी अहमदाबाद की सत्संगी बहनें तो विशेष भाग्यशाली है। इसलिये जो सत्संगी बहनें इस दिव्य सभा का लाभ लेने से वंचित है वे अवश्य इस सभा का लाभ ले ऐसा सभी से नम्र निवेदन है।

•

अक्षरधाम के मुक्तराज शिवलाल शेठ

- सां.यो. मोंघीबा (स्वा.मं. बहनोका धोली)

महाप्रभु भगवान स्वामिनारायणने वर्षो तकतप करके पशु, पक्षी, वृक्ष, तालाब, वन, पर्वत तथा अनेकों मुमुक्षुओं को अपने अवतार का दिव्य लाभ दिया। यह लाभ जब नीलकंठ वर्णी के रुप में वन विचरण कर रहे थे उस समय आसुरी तत्व का सर्वनाश करके सर्वोपरि उपासना के रहस्य को भी समझाया था।

उसी अन्तराल में भगवान स्वामिनारायण विचरण करते हुये बंगाल के सिद्धपुर शहर में सिद्धवल्लभ राजा के यहां पधारे। यह प्रसंग भक्त चिंतामणी के ३५ वें प्रकरण

में आया हुआ है।

सिद्ध वल्लभ राजा के यहाँ नीलकंठ वर्णी चार महीने तक रहे। राजा ने वर्णी से कहा कि यह सम्पूर्ण राज्य हम आपको दे रहे हैं। आप यहीं रहे, जिससे हम आपके साथ रह सके। वर्णी ने कहा आप चिंता मत कीजिये आप मेरे साथ तथा मेरे संतो के साथ रहेंगे यह व्यवस्था हम करेंगे। हुआ भी ऐसा महाराज की कृपा से वह राजा बोटाद के नवलखा शिवलाल शेठ हुये वे जब वडताल जाते तब सद्गुरु गोपालानंद स्वामी उन्हे आओ सिद्धवल्लभरा ऐसा कहकर बुलाते थे।

शिवलालभाई के पास भगवान की कृपा से खूब धन सम्पत्ति थी। अर्थात् नवलाख रुपये के आसामी थे। उनके पिता श्री भगाभाई की पेढी चलती थी। फिर भी पैसे का घमंड नहीं था।

ऐसी स्थिति में से शिवलालभाई सत्संग मे आकर बड़ी दृढता के साथ तथा समझदारी पूर्वक कार्य करते थे। शिवलालभाई कहते थे कि अहो...हो..... । मेरे ऊपर महाराजकी खूब कृपा है, जिसके परिणाम स्वरुप यह जाहो जलाली है।

शिवलाल शेठ सद्. गु. गुणातीतानंद स्वामी का योग एवं सत्संग करके अपने जीवन को आत्म समर्पित भगवत् परायण बना लिया था। भगवत भक्त होने के नाते वे आज भी संप्रदाय में शिरमौर्य कहे जाते हैं। इस तरह के समर्पित भक्त थे।

•

उत्सव का महत्व

- पटेल हिरल पी. (बापूनगर-एप्रोच)

उत्सव का क्या महत्व है। उत्सव का यह महत्व है कि यदि श्रीजी महाराज द्वारा रचित शास्त्र के अनुसार उत्सव मनाया जाय तो अनेकजीवों का कल्याण होगा। इसी हेतु से अपने संप्रदाय में आज भी नानाविधउत्सव होते रहत हैं। जब स्वामिनारायण भवान इस पृथ्वी पर विचरण कर रहे थे उस समय वे अनेकों उत्सव किये थे। इन उत्सवो में देश के सभी विभाग से संत-हरिभक्तों को बुलवाते थे। इन सभी के पीछे एक ही कारण है कि जीव का कैसे कल्याण हो। इस संसार के फेरे में उसका मोक्ष कैसे हो ?

कोई मनुष्य यदि ऐसे उत्सव में आये और आते समय मार्ग में मृत्यु हो जाय तो निश्चित ही उसका मोक्ष हो जायेगा। ऐसे उत्सव के दर्शन से अनेकों पाप नष्ट हो जाते हैं। भगवान स्वामिनारायणने हम पर कितनी कृपा कि जो बड़े-बड़े धामों में बड़े-बड़े मंदिर बनाकर उसमें स्वयं अपने हाथों से मूर्तियों की प्रतिष्ठा की। अहमदाबाद मंदिर में बिराजमान श्री नरनारायणदेव जिस के दर्शन से खूब सुख-शांति मिलती है। अपने गुरु जो धर्मवंशी आचार्य है उनकी स्थापना स्वयं श्रीजी महाराज ने की थी। इसलिये ऐसे देव आचार्य का दर्शन करके अपने जीवन को धन्य बनाये।

•

अमृत कहाँ है

- पटेल अंजना आर. (वजापुर)

एक समय नैमाषारण्य क्षेत्र में सभी ऋषि मुनि एकत्रित हुये। वहाँ यह प्रश्न उठा की अमृत कहाँ है।

उसमें से किसी ने कहा समुद्र में होना चाहिये कारण यह कि समुद्र मंथन के समय लक्ष्मीजी अमृत लेकर समुद्र में से निकली थी। इसलिये अमृत समुद्र में होना चाहिये। किसी ने कहा अमृत समुद्र में होता तो समुद्र खारा क्यों होता ? इसलिये समुद्र में नहीं है। दूसरे ने कहा चन्द्रमा में होना चाहिये क्यों कि सभी को शांति एवं शीतलता प्रदान करता है। वनस्पति का पोषण चन्द्रमा ही करता है। उसमें से किसीने कहा यदि उसमें होता तो वह क्षयरोगी क्यों होता ? इसलिये चन्द्रमा में भी अमृत नहीं है। तीसरे ने कहा स्त्री के अधरोष्ठ में अमृत है, जिससे बड़े-बड़े देव, योगी, राजा, तपस्वी भी उस अमृत का पान करने के लिये पथभ्रष्ट हो जाते हैं। तो किसी ने कहा यदि स्त्री के अधरोष्ठ में अमृत होता तो उसका पति मर क्यों जाता है। इसलिये उसमें भी नहीं है। किसीने कहा अमृत पाताल में होना चाहिये। तो पाताल में ही सर्प रहते हैं उमनें विष नहीं होना चाहिये। विष रहता ही है। इसलिये वहाँ भी अमृत नहीं है। किसी ने कहा स्वर्ग में होना चाहिये। यदि वहाँ होता तो देवतालोग पृथ्वी पर क्यों आते ? वहाँ भी नहीं है। अंत में सभी विचारकर बोले कि अमृत तो भगवन के भक्तों में,

साधु पुरुषो के मुख में रहता है। क्योंकि जो संत-पुरुषो की कथा का पान करता है वह कुटुम्ब के साथ अमर हो जाता है। इसलिये बड़े-बड़े पापी भी संत के दर्शन से तथा समागम से पावन हो जाते हैं। इसलिये इस लोक तथा पर लोक के सुख के साधन संत ही है। स्त्री-पुत्रादि का स्नेह पाश भी संतो के साहचर्य से छूटता है। इसलिये जिन्हे इसलोक तथा परलोक दोनो सुखी करना है वे अवश्य संत समागम करें।

ये घनश्याम तो सर्वावतारी है

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (अहमदाबाद)

एकादशी के दिन घनश्याम प्रातः प्रथम उठकर नहा धोकर पूजापाठ करके मंदिर दर्शन करने जाते। ऐसे ही एक एकादशी के दिन घनश्याम महाप्रभु हनुमानगढी दर्शन करने गये। मंदिर के महंत बाबा मोहनदास रामचरित की कथा कर रहे थे। कथा में एकादशी का वर्णन आया। एकादशी करने से एक अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है। यह सुनकर घनश्याम बाबाजी से पूछे कि बहुत सारे लोग एकादशी का व्रत नहीं करते इसका क्या कारण है?

मोहनदासने कहा, प्रभुने यह दुर्लभ मनुष्य देह दिया है तो इसे इतना कठिन व्रत करके क्यों कष्ट देना चाहिये। यह देह कष्ट भोगने के लिये नहीं है। जब से जगन्नाथ पुरी में एकादशी को भात का भोग लगने लगा तब से लोग एकादशी व्रत नहीं करते। लोग समझते हैं भूखे रहने से आतमा को कष्ट होता है। इसलिये खा-पीकर स्वस्थ रहो। एकादशी कौन करता है ? जिन्हें खाने-पीने को नहीं मिलता। उपवास करके शरीर को क्यों कष्ट देना।

घनश्याम जी को हुआ कि यह बाबा गलत उपदेश दे रहे हैं। लोगो को गलत मार्ग पर चढा रहे हैं। इन्हें सही उपदेश देना चाहिये। महाप्रभुने कहा, बाबाजी, ऐसा गलत उपदेश मत दीजिये। शास्त्र विरुद्ध उपदेश करने से पाप लगता है। एकादशी का बहुत माहात्म्य है इसलिये ज्ञानपूर्वक व्रत करना चाहिये।

बाबाजी यह सुनकर गरम हो गये, तू कल का लड़का हमें उपदेश दे रहा है। शरम नहीं आती ?

यह सुनकर घनश्याम ने बाबा की तरफ दृष्टि की कि बाबाजी को समाधिलग गयी। समाधिमें यमपुरी गये यमदूत बाबाजी को मारने लगे। यमदूत कहने लगे साधु होकर कभी एकादशी नहीं किये, खा-पीकर मोटे हो गये और गलत उपदेश भी कर रहे हो। यह कहकर उन्हे मारने लगे।

यहाँ मंदिर में महंत की शरीर आसन पर गिरकर उछलने लगी, जोर-जोर चिल्लाने लगे बचाओ हमें यमदूत मार रहे हैं। मार खाकर बाबा अधमरे हो गये।

थोड़े समय के बाद समाधिसे जगे कि तुरंत बाबा घनश्याम के चरण में गिर पड़े।

बाद में बाबाने सभा में कहा कि यह घनश्याम छोटा बालक नहीं है बल्कि सर्वावतारी प्रभु है। हम आपको पहचान नहीं पाये, परिणाम स्वरुप यमयातना भोगनी पड़ी। मैं इतने वर्षो तक एकादशी नहीं की, अब मैं प्रति एकादशी करुँगा। लोगों को एकादशी करने का उपदेश करुँगा।

इतना कहकर बाबा घनश्याम को दंडवत प्रणाम किये। अपनी गद्दी पर बैठाकर पूजन-अर्चन किये। सभी भक्तजन भी घनश्याम को प्रणाम करके एकादशी करने का निश्चय किये। घनश्याम प्रभु बाबा को आशीर्वाद देकर घर आये।

श्रीहरि भले कोई शास्त्र नही पढे थे फिर भी दृष्टि मात्र से कलेवर बदलने की करिश्मा थी। यह कला किसी अवतार में नहीं थी। इसलिये श्रीहरि (श्री नरनारायणदेव) के आश्रित होने का भान रखकर भजन करते रहना चाहिये।

निर्विकल्प, उत्तम, अति निश्चय तव घनश्याम

श्री स्वामिनारायण अंक के सदस्यों को सूचना

अपने श्री स्वामिनारायण अंक के देश-विदेश के सदस्यों को विशेष सूचना है कि आप जब भी अपना स्थान परिवर्तन करें तो नतून पता अवश्य लिखकर सूचित करें। परंतु उस के साथ ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें। ग्राहक नं. न लिखे जाने पर पता परिवर्तित नहीं होगा।

सत्संग समाचार

वडनगर

पौराणिक नगरी वडनगर के शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण मास में मंहत स्वामी हरिसेवादासजी की प्रेरणा से प्रतिदिन आकर्षक झूले में पुजारी अभिषेकप्रसाददासजी तथा अन्य युवान बालक श्री हरिकृष्ण महाराज को सजाकर सुन्दर लाभ लिये थे। इस के साथ ही श्रावण मास में शा. अभिषेकप्रसाददासजीने श्रीमद् भागवत की कथा का अलौकिक लाभ दिया था। श्रावण मासमें अंतिम दिन शास्त्री नारायणवल्लभदासजीने हरिभक्तों की सामूहिक महापूजा कराकर तथा धर्मकुल महिमा को समझाकर अलौकिक लाभ दिया था। - शा. नारायणवल्लभदासजी

घमासणा

इस वर्ष श्रावण मासमें वडनगर के शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी के मंडल द्वारा घमासणा के हरिभक्तों को श्रीमद् भागवत की रसप्रद कथा की गयी थी। अंतमें घमासणा मंदिर में कोठारी तथा हरिभक्तों के आयोजन से समूह महापूजा कार्यक्रम श्रावण कृष्ण-१४ के दिन सम्पन्न हुआ था। जिसमें हरिभक्त उत्साह के साथ भाग लिये थे। साधु बालमुकुंददासजी तथा अहमदाबाद के साधु हरिप्रकाशदासजी इत्यादि संतो ने प्रभु का प्रसाद तैयार करके अर्पण किये थे। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा जन्माष्टमी उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

विसनगर

विसनगर के सुप्रसिद्ध श्री स्वामिनारायण मंदिर में भाद्र मास में श्रीमद् भागवत की कथा शा. अभिषेकप्रसाददासजी ने सुमधुर घर शैली में किये थे। हरिभक्तों को कथा का आनंद देकर वातावरण को मनोरंजक बना दिया था। मंदिर के को. श्रीकांतिभाई तथा श्री उदयनभाई महाराज इत्यादि हरिभक्त तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभी सदस्य कथा का आयोजन करके उदाहरण रुप बने थे। - शा. नारायणवल्लभदासजी

बायड

यहाँ के श्री स्वामिनाराय मंदिर में श्रावण कृष्ण-११ से भाद्र शुक्ल-४ तक वडनगर के स्वा. अभिषेकदासजी के वक्ता पद पर श्रीमद् भागवत की कथा का सुंदर आयोजन किया गया था। मंदिर के को. श्री डाह्याभाई तथा श्री कनुभाई पटेल एवं अन्य हरिभक्त कथा का सुंदर आयोजन किये थे। बायड के अनेक हरिभक्त कथामृत का लाभ लेकर श्रावण मास के सत्संग को चरितार्थ किये थे। - शा.नारायणवल्लभदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर पूज्य ध्यानी स्वामी की उपस्थिति में गुरुपूर्णिमा का महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर लंदन, दुबई, अमेरिका, मुंबई, वडोदरा, जामनगर, राजकोट, मोरबी, पोरबन्दर, भावनगर तथा कच्छ से हरिभक्त श्री नरनारायणदेव तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के दर्शन-आशीर्वाद के लिए दूर दूर से आये हुये थे। पू. स्वामी का शिष्य मंडल गांधीनगर मोरबी, वासणा, बावला, पेथापुर तथा कणभा से पधाकर गुरुपूजन किये थे। इस प्रसंग पर मोरबी के धारासभ्य मंत्रीश्री वासणभाई आहीर तथा भू.पू. मंत्री भूपेन्द्रसिंह चूडासमा इत्यादि सभा में उपस्थित होकर सुंदर लाभ लिये थे।

पू. ध्यानी स्वामीने सभा में आशीर्वाद देते हुये कहा कि हम सभी के गुरु प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री है। आज के शुभ दिन उन्हीं का दर्शन-पूजन करना चाहिये। हम सभी के गुरु के गुरु सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान है। उन्ही को पतिव्रता की तरह ध्यान में रखना चाहिये। उन्हीं की मनमोहक मूर्ति को हृदय में उतारना चाहिये। इस तरह आशीर्वाद दिये थे। करीब आठ हजार भक्त उपस्थित थे। - प्रो. सूर्यकान्त भट्ट

श्री सहजानंद गुरुकुल असारवा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के पुराने निवास स्थान पर श्री स्वामिनारायण वाडी में श्री सहजानंद गुरुकुल में नूतनसत्र के प्रारंभ पर अभ्यासार्थ आये हुये बालको को प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने संप्रदाय के सत्संगी की दीक्षाअर्थात् गुरुमंत्र का महा उपदेश देकर सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का सच्चा सत्संगी बनाया है। सभी को हार्दिक आशीर्वाद देकर सुखी किया है। यह प्रसंग शा.स्वा. निर्गुणदासजी के निर्देश में आयोजित हुआ

था। - श्री सहजानंद गुरुकुल परिवार

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में चातुरमास दरम्यान श्री हरिकृष्ण महाराज को नाना विधझूले को अलंकृत करके झूलाया गया था।

श्रावण मास में रात्रि पारायण के अवसर पर श्री स्वामी निष्कुलानंद रचित "यमदंड" की कथा शा. सत्यसंकल्पदासजीने की थी। जन्माष्टमी के दिन भजन-कीर्तन-कथा इत्यादि का आयोजन सम्पूर्ण दिन चला बाद में श्री कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव रात्रि १२ बजे मनाया गया था। इस के साथ ही २ बजे तक रास गरबा का आयोजन भी किया गया था।

इस उत्सव के प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के पुजारी स्वा. राजेश्वरानंदजी, नारायणघाट मंदिर के दोनो महंत पी.पी. स्वामी एवं देव स्वामी तथा अन्य संत स्कीम कमेटीके सदस्य रतिभाई पटेल इत्यादि उपस्थित होकर हरिभक्तों को प्रोत्साहित किये थे।

प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी एवं हरिभक्तों की प्रेरणा से सत्संग अच्छा चल रहा है। - प्रविणभाई उपाध्याय

धरियावद (राजस्थान) श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी वासुदेवानंद जी की प्रेरणा से एवं महंत महापुरुषानंदजी के मार्गदर्शन में मंथन भगत एवं गौरांग भगत तथा हरिभक्तों ने जन्माष्टमी का जन्मोत्सव खूब धूमधाम से मनाया। - कनुभाई

विरमगाँव श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का)

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में (सुथार फली) भव्य कलात्मक झूले पर ठाकुरजी को झुलाकर दर्शन का लाभ दिया गया था। गाँव के हजारों हरिभक्त दर्शन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किये। - ठक्कर बाबूभाई

मेघाड़ीनगर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से करीब १४ वर्ष से बाल सत्संग सभा चल रही है। बाल मंडल पर धर्मवंश की खूब कृपा है। कक्ष १ से ९ तक के उत्तीर्ण होने वाले बालकों को ता. २६-२७ जुलाई को इनाम देने का आयोजन किया गया था। प्रति रविवार को बाल सभा में १०० जितने बालक नियमित भाग लेते हैं। - देवाणी रणछोडभाई

राजस्थान-वाली के मुंबई स्थायी हुये हरिभक्त द्वारा सत्संग सभा

ता. २८-१२-०९ को मलाड (मुंबई) में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहां पर श्री नरनारायण सत्संग मंडल की स्थापना हुई। प्रति रविवार को प्रातः ९ बजे से ११ बजे तक ग्रान्टरोड कबीरवाडी में नियमित सभा का आयोजन होता है। संत तथा १०० से भी अधिक हरिभक्त एकत्र होकर कथा कीर्तन- वचनामृत पठन करते हैं। मुंबई मंदिर तथा मीरा रोड मंदिर के संत अवार-नवार कथा का लाभ देते रहते हैं।

प्रत्येक सभा में श्रीजी महाराज की प्रार्थना करके यह कहा जाता है कि हे महाराज ! हम सभी को धर्मकुल के प्रति वफादार रखियेगा। क्योंकि हरिकृपा से धर्मकुल आचार्य का आश्रय ग्रहण करके ही मोक्ष साध्य है.

सभा के अंत में नित्य-नियम-आरती की जाती है।

नोंट : राजस्थान के इस निष्ठावान हरिभक्त ने स्पेश्यल बस करके ता. १६-८-०९ को श्री नरनारायणदेव तथा प.पू. महाराजश्री का दर्शन करने आया तथा नारायणपुरा मदिर में प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को प्रत्यक्ष मिलकर ५१,०००/- रुपये का चेक श्री स्वामिनारायण म्युझियम की सेवा में अर्पण किया पू. महाराजश्री को हिन्दी में सत्संग प्रवृति का एक पत्र भी अर्पण किया। जिसका सारांश यहाँ दिया गया है।

धन्य है ऐसा धर्मकुल से निष्ठा रखने वाला भक्त। ऊपर महाराज भी खूब प्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

हिंमतनगर

यहाँ हिंमतनगर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी के आशिर्वाद से ता. १६-८-०९ को समस्त सत्संगी बहने महापूजा का आयोजन की थी। महापूजा विधिकरजीसण के जशु भगत ने करवाया था।

इस प्रसंग पर पुरुषों के अलग सभा में हिंमतनगर तथा

इडर के महंत स्वामी एवं शोकली से रघुवीर स्वामी तथा स्कीम कमेटी के सदस्य डॉ. के. के. पटेल इत्यादि लोग श्रीहरि की महिमा तथा धर्मकुल की महिमा को समझाये थे। - निकेशभाई, महेशभाई

वसई श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से श्रावण मास में यहाँ के मंदिर में ठाकुरजी को नानाविधअलंकृत झूले में झुलाया गया था। सायंकाल एक घंटे तक कथा-कीर्तन किया गया था। -रजनीभाई भावसार

साबरमती श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा नारायणघाट के मंहत छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्रावण मास में यहाँ के मंदिर में नानाविधझूले को अलंकृत करके ठाकुरजी को झुलाकर सभी को दर्शन का लाभ दिया गया था।

श्रावण मास में विदुरनीति तथा स.गु. गोपालानंद स्वामी कृत श्रीहरि लीलाचरित्र की कथा शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने मधुरवाणी में की थी. ता. १५-८-०९ को ज्ञान सत्र की पूर्णाहुति के प्रसंग पर सभी के हृदय सम्राट प.पू. बड़े महाराजश्री पधारकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।- रावजी पटेल

गोकलियुं गाँव शांकापुर में कथा पारायण

श्रीहरि की प्रसादी शाकापुरा गाँव में पटेल त्रिभोवनदास माधवदास परिवार को कईबार प्रभु के चमत्कार का दर्शन हुआ था। जहाँ पर आज अपना श्री स्वामिनारायण मंदिर है। जिस में प.पू. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी के वरद् हाथों से प्रतिष्ठा हुई थी। इस गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मंदिर को २५ वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयंती महोत्सव ता. ४-५-०९ से ता. १०-५-०९ को धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर कथा सम्पन्न हुई। ग्रामजन कथा का सुंदर लाभ लिये थे। पूर्णाहुति के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर अपने हाथों से ठाकुरजीकी आरती उतारकर कथा की पूर्णाहुति आरती उतारे थे। विद्वान संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। अंत में करीब ७००० जितने भक्तजन प्रसादलेकर विदा हुये थे। - रमेशभाई पटेल ह्युस्टन

नूतन शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर, सिद्धपुर पाटोत्सव के परिवर्तन हेतु

समस्त सत्संग को ज्ञातव्य है कि प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सिद्धपुर नूतन शीखरी मंदिर का पाटोत्सव कार्तिक वद-२ की जगह पर कार्तिक शुक्ल-१४ को संपन्न होगा। प्रति वर्ष इसी तिथि को पाटोत्सव मनाया जायेगा।

सिद्धपुर फोन नं. मे परिवर्तन (०२७६७) २२५९०१ व्रत उत्सव के निर्णय में पुराने मंदिर का फो.नं. छपा हुआ है।

मूली प्रदेश का सत्संग समाच

मूलि मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का समैया

मूली मंदिर में प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी सर्वोपरि श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के शुभ सानिध्य में तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के सभा मंडप में पूजयनीय संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू. बड़े महाराजश्रीने समस्त सत्संग को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। महंत स्वा. नारायणप्रसाददासजीने उत्सव का सुंदर आयोजन किया था।

श्रावण मास में नानाविधझूले को अलंकृत करके ठाकुरजी को झुलाया गया। श्री राधाकृष्णदेव के पुजारी जे.पी. स्वामी तथा संत मंडलने उत्तम सेवा की थी। - शा.हरिप्रकाशदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर

यहाँ के नूतन शिखरी श्री स्वामिनाराय मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से आषाढ कृष्ण-२ तक ठाकुरजी को विविधकलात्मक झूले पर झुलाया गया था। जिसके दर्शन का लाभ लेकर भक्तों के आनंद की सीमान रही। आठ दिन तक रुपये, चांकलेट, पंचमेवा, वेलवेट अनाज इत्यादि से अलंकृत किया जाता है। बडी संख्या में भक्त रोज दर्शन करने उपस्थित होते थे। इसका आयोजन शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से पंकजभाई परीख, श्री धर्मेश महेता तथा श्री नरनारायण युवक मंडल ने किया।

श्रावण वद-९ से श्रावण कृष्ण अमावस्या तक श्रीमद्

सत्संगिजीवन तथा वचनामृत अध्ययन शा.स्वा. हरिओंमप्रकाशदासजी (संस्कृत पाठशाला जेतलपुर संचालक तथा शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी ने किया था। कथामृत का लाभ लेने प्रतिदिन भक्तजन एकत्रित होते थे। - शैलेन्द्रसिंह झाला

घनश्यामनगर (ता. हलवद)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से भक्त चिंतामणी ग्रन्थ का पारायण तथा श्रीजी महाराज का माहात्म्य एवं धर्मकुल की महिमा का वर्णन साधु भक्तिविहारीदासजीने समझायी थी।

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी की आज्ञा से मोरबी की सां.यो. कुंवरबा तथा उषाबाने बहनो की समूह महापूजा करवायी थी। जिसमें करीब १२१ बहनों ने भाग लिया था। समग्र व्यवस्था न.ना.यु. मंडल ने की थी। - गोरधनभाई एस.

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिमेन्सन (साउथजर्सी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी की प्रेरणा से साउथजर्सी श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीहरिकी शिक्षापत्री में निर्दिष्ट श्लो. १४९ के आज्ञानुसार श्रावण मास में शिव पूजन का दिव्य आयोजन किया गया था। भक्तजन बड़ी संख्या में उपस्थित होकर इसका लाभलिये थे।

इस प्रसंग पर स्वामी जी के पूजन का रहस्य समझाया था। अंत में पूजन-आरती करके सभीको भोजन कराया गया था।

इस प्रसंग की सेवा श्री नवीनभाई, श्री जगदीशभाई तथा श्री अरविंदभाई ने की थी।

झुलोत्सव : श्रावण मास में शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा हरिभक्तों के सहयोग से ठाकुरजी को सुन्दर झूले में बैठाकर झुलाया गया था। हजारो भक्त इस दर्शन का लाभ लिये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से आई.एस.एस.ओ. अमेरिका में सत्संग वृद्धि उत्तरोत्तर हो रही है।- नवीनजी पटेल

बोस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर का तृतीय पाटोत्सव संपन्न

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में यहाँ का तीसरा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत स्नेहगीता का त्रिदिनात्मक पारायण शा.स्वामी सिद्धेश्वरदासजीने किया था। पाटोत्सव के मुख्य यजमान पटेल विजयभाई तथा सुरेशभाई एवं ज्ञानेशभाई धोलकिया थे। पारायण के यजमान पटेल जितेन्द्रकुमार थे। धर्मकुल पूजन के यजमान श्री रसीकभाई पटेल तथा उनके पुत्र जयेसभाई तथा संजयभाई थे। महापूजा के यजमान विजयभाई, सुरेशभाई पटेल थे। महाप्रसाद के यजमान मुकेशभाई, निलेशभाई तथा दिनेशभाई पटेल थे।

इस पाटोत्सव के प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री प्रतिदिन सभा में पधारते थे। इस प्रसंग पर साउथजर्सी से. शा. विश्वप्रकाशदासजीतथा न्युजर्सी मंदिर से माधव स्वामी संतो के साथ पधारे थे। प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक तथा पूर्णाहुति की गयी थी। सभा में यजमान परिवार तथा कमेटी के सदस्य प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे। - अरविंदभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होकर दर्शन का लाभ लेते हैं। इसी समय वडताल से प.पू.ध.धु. आचार्यश्री राकेशप्रसादजी महाराज दर्शन करने पधारे थे। हरिभक्त उनका खूब दिव्य विधिसे स्वागत किये। पू. महाराजश्री अपने मंदिर, अपने देव तथा आचार्य में निष्ठा देखकर प्रसन्न हुये।

गुरु पूर्णिमा के शुभ दिन सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर रखकर पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्ति की कामना की गयी।- रमेशभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ मंदिर में उत्सव की परंपरा चलती रहती है। रथयात्रा उत्सव खूब धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री, पू. बिन्दुराजा, श्री सौम्यकुमार, श्री सुव्रतकुमार पधारे थे। सभा में महंत स्वामीने रथयात्रा का माहात्म्य समझाया था। इस अवसर पर सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर का पूजन-अर्जन करके दर्शन का दिव्य लाभ लिया गया था। यहा के महंत ज्ञान स्वामीने धर्मवंशी गुरु आचार्य महाराजश्री की महिमा समझाया था। हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थिते थे।-पी. शाह

वोशिंग्टन डी.सी. (आई.एस.एस.ओ.)

११ जुलाई शनिवार सायंकाल ५-१५ से ९-१५ तक मेरी

लेन्ड में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । कलिवलेन्ड से हरिवल्लभ स्वामीने कथा का लाभ दिया था । झूलोत्सव तथा गुरुपूर्णिमा के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर के पूजन का लाभ सभी भक्तों ने लिया ।सिद्धपुर के चमत्कार की सीडी बतायी गयी थी ।

१२ जुलाई रविवार को सत्संग सभा में साउथजर्सी से शा. विश्वप्रकाशदासजीने कथा का सुंदर लाभ दिया था । प्रत्येक सभा में हरिभक्तों की संख्या खूब होती है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है ।- कनुभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (ओस्ट्रेलिया)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है । ता. १२-७-०९ तथा १८-७-०९ को अलग-अलग ढंग से झूले को सजाकर ठाकुरजी को झुलाया गया था । ता. २६-७-०९ के दिन अ.नि. रवजीभाई वाधजियाणी के स्मरणार्थ श्री खीमजीभाई वाघजियाणी की तरफ से सभा हुई थी ।

ता. २-८-०९ के दिन ओस्ट्रेलियन रुपयों से झूले को सजाकर ठाकुरजी को झुलाया गया था । इसके यजमान श्री व्रजमारु, श्री दीलीपभाई दरजी, सहयजमान श्री घनश्यामभाई कनाणी थे । गुरुपूर्णिमा के दिन सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी तस्वीर का पूजन-अर्चन किया गया था । ता. १९-७-०९ को सभा में सिद्धपुर मंदिर के श्रीहरिकृष्ण महाराज के चरणारविंद का सी.डी. द्वारा दर्शन कराया गया था । इस दिन की सभा श्री परेशभाई जुठाणी की तरफ से हुई थी ।- तेजस पटेल

लेस्टर (आई.सएस.एस.ओ.) मंदिर में पाटोत्सव

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव प.पू. महाराजश्री प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी, पू. श्रीराजा के सानिध्य में ता. २६-७-०९ से २-८-०९ तक धूमधाम से संपन्न हुआ । इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत कथा श्री योगेन्द्रभाई भट्ट के वक्तापद पर संपन्न हुई । कथा में आनेवाले सभी प्रसंग अच्छी तरह मनाये गये । सी.डी. विमोचन पू. लालजी महाराजश्री के हाथों हुआ । ता. ३०-७-०९ को भावि आचार्य श्री लालजी महाराजश्री के हाथों हुआ । ता. ३०-७-०९ को भावि आचार्य श्री लालजी महाराजका प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया । जिस में लंडन, कार्डिफ, स्ट्रेधाम, वुलवीच, स्टेनमोर, ओस्हाम तथा बोल्टन के हरिभक्त उपस्थित थे । समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । प.पू. गादीवाला का दर्शन करके समस्त महिला वर्ग दिव्य आनंदका अनुभव की थी ।

श्रावण मास में विविधप्रकार के झूले पर ठाकुरजी को झुलाया गया था । जिसका लाभ बड़ी संख्या में भक्तों ने लिया । समग्र उत्सव में महिला वर्गने सेवा करके श्रीहरि का तथा धर्मकुल की प्रसन्नता प्राप्त की थी ।- किरण भावसार

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

उनावा : प.भ. महेशभाई नारणभाई पटेल आषाढ शुक्ल-१४ को युवावस्था में श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अहमदाबाद : प.भ. अंबालाल पुरुषोत्तमदास पंचाल (उनावावाला) ता. ८-८-०९ को श्रीजी महाराजका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

वडु (ता. कडी) : प.भ. संतोकबहन कांतिलाल पटेल ता. ३-८-०९ को श्रीहरिका स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अहमदाबाद : प.भ. कांताबहन रमणलाल दरजी (श्री योगेशभाई दरजी युवक मंडल सदस्यकी माताजी) ता. २७-७-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

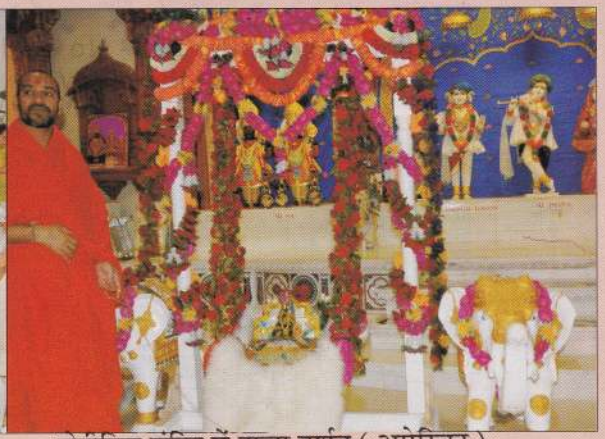
मणीपुरवाला (ता. कडी) : प.भ. भीखाभाई शिवलाल पटेल ता. २१-७-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अहमदाबाद : प.भ. लालजीभाई लवजीभाई पटेल (देवपुरा ता. विरमगाम) ता. ११-८-०९ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

संपादक , मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित



चेरीहिल मंदिर में शिवपूजन



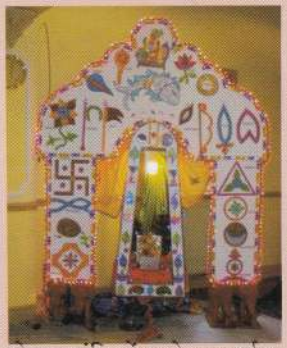
चेरीहिल मंदिर में झूला दर्शन (अमेरिका)



कलिवलेन्ड (अमेरिका) मंदिर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प से भारतीय परंपरा की शिल्प स्थापत्य कला का बेनमून बन रहा है। जिस में श्री प्रकाशभाई पटेल विशेष योगदान कर रहे हैं



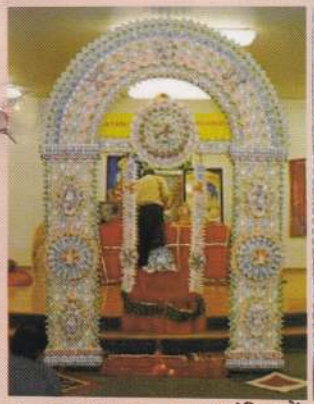
अटलान्टा (आई.एस.एस.ओ.) चेप्टर में महिलावर्ग द्वारा समूह महापूजा



बोस्टन मंदिरमें झूले का दर्शन



सीडनी मंदिरमें झूले का दर्शन



एल.ए. (यु.एस.ए.) मंदिर में झूलेका कलात्मक दर्शन



विरमगाम बहेनोका मंदिर में झूलेका दर्शन



धरियावद (राज.) मंदिर में श्रावण मास में ठाकुरजी का अलौकिक दर्शन

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011



बोस्टन मंदिर में ठाकुरजी का पाटोत्सव महाभिषेक करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री



लेस्टर मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का महाभिषेक करते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री

Praful Kharsani

JAGADISH OFFSET